ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

स्वामी दयानन्द सरस्वती

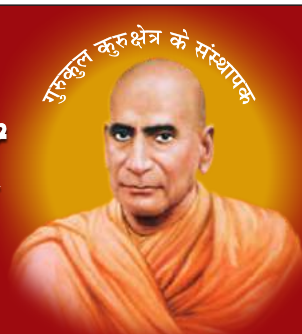

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

पौष वि. स. २०७४ • कलियुगाब्द ५११८ • वर्ष : ०५ • अंक : ०१ • जनवरी २०१८

'केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्र शेखावत ने गुरुकुल का भ्रमण किया'

स्वामित्व :

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल आगमन पर हरियाणा के लोकायुक्त माननीय नवलकिशोर अग्रवाल जी को उपहार भेंट करते प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी जी

समाज सुधार की झलकियाँ

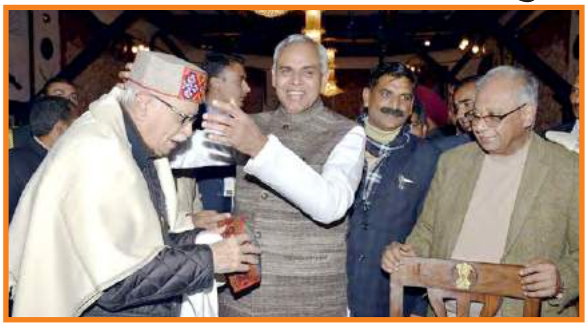

शिमला आगमन पर भाजपा के वयोवृद्ध नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी का पारम्परिक रुप से स्वागत करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

हिमाचल प्रदेश के नवनियुक्त मुख्यमंत्री माननीय जयराम जी को शुभकामनाएं देते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, साथ में हैं प्रेस सचिव जयन्त शर्मा जी

'जीरो बजट प्राकृतिक खेती' मॉडल हेतु राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित करते हुए एम.डी. यू, रोहतक का प्रतिनिधि मंडल

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के साथ 'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र' गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रशिक्षु भजनोपदेशक सुनित आर्य, अमित, साहिल व विशाल आर्य

'भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं उत्थान' विषय पर पंजाब में एक कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

सोनीपत के हिन्दू कन्या महाविद्यालय में आजादी बचाओ आन्दोलन के तहत 'युवा स्वास्थ्य सम्मेलन' को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

हिमाचल प्रदेश पुलिस के 'प्रथम स्थापना दिवस समारोह' में पुलिए व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

कुरुक्षेत्र के गांव कैंथल खुर्द में 'जीरो बजट प्राकृतिक खेती' पर आयोजित विशाल किसान मेले को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत
(महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: समरपाल आर्य
: अशोक कुमार

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

आवश्यक सूचनाएं

1. '**गुरुकुल दर्शन**' मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

– संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी	02
2.	सफलता का रहस्य	03
3.	मनु और गृहस्थ धर्म	04
4.	योगिराज श्रीकृष्ण का सच्चा स्वरूप	06
5.	मेरे ईश्वर सबसे महान्	08
6.	An Indian Soldier : The Real Hero	10
7.	अग्निहोत्र और इसके लाभ	11
8.	पति-पत्नी मिलकर गृहस्थ को सुखी बनाएं	13
9.	आर्यसमाज और डॉ. भीमराव अम्बेडकर	14
10.	महर्षि दयानन्द के चार पदार्थ	15
11.	खण्डन - मण्डन	16
12.	एक ऐतिहासिक घटना	17
13.	औषधीय गुणों की खान : हल्दी	18
14.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	19
15.	वास्तविक जीवन की खोज	20
16.	गुरुकुल समाचार	21
17.	शून्य लागत प्राकृतिक खेती के सूत्र	22
18.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

धर्म नष्ट होने पर मनुष्य नष्ट हो जाता है।

संपादकीय

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी

वैदिक संस्कृति के पोषक एवं भारतवर्ष लुप्त हो चुकी गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को नवजीवन प्रदान करने वाले अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को हर्षोल्लास से मनाया गया। स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थों में ऋषि दयान्द के उत्तराधिकारी थे। उन्होंने जो आदर्श, मन्तव्य, सिद्धान्त दिए उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने क्रियात्मक रूप दिया। गुरु दयानन्द के प्रति उनकी श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण प्रशंसनीय व अनुकरणीय है। उनका गुरुकुलीय शिक्षा, नारी उत्थान, शुद्धि, राजनीति, समाज-सुधार आदि क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान है। स्वामी श्रद्धानन्द तप-त्याग, तपस्या, दृढ़ता, आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जो प्रेरक कार्य किये, उनके अतिरिक्त आज तक कोई नहीं कर पाया। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल कुरुक्षेत्र इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के प्रेरक पक्ष आर्यसमाज के नेताओं, अधिकारियों, उपदेशकों, पुरोहितों आदि सभी को सन्देश देतें है- जीवन को ऊंचा उठाओ। चरित्र को पवित्र बनाओ। आचार विचार में सुधार लाओ। पद, स्वार्थ और अहंकार को त्यागो। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन के लिए समर्पित भाव से सेवक बनकर कार्य करो। जब तक हमारा आचार, विचार, व्यवहार और जीवन सुन्दर व श्रेष्ठ नहीं होगा तब तक हम दूसरों को प्रभावित और आकर्षित नहीं कर पाएंगे। आर्यसमाज की जो चारित्रिक गरिमा है, उस पर किसी भी परिस्थिति में आंच नहीं आने दें, उसे बनाए रखें।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के पूर्वपक्ष के चित्र में नास्तिकता, खानपान की अपवित्रता, आचरण की मलिनता, भोग-विलास की प्रधानता, धर्म-कर्म, ईश्वर भक्ति आदि में तटस्थता मिलती है। स्वामी दयानन्द के अद्वितीय, चुम्बकीय व्यक्तित्व के दर्शन और अभाव पाण्डित्य के स्पर्श से मुंशीराम के ज्ञानचक्षु खुल गये। जीवन की दशा और दिशा बदल गई, कायाकल्प हो गया। हृदय में वैचारिक तूफान उठा, परिवर्तन आया। पतीत जीवन से उठकर प्रेरक जीवन की ओर चल पड़े। सत्य-श्रद्धा व विवेक की भावना से ओतप्रोत हो गये और इस प्रकार मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। उनके जीवन का यह परिवर्तन असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर तथा अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर प्रेरणा देता है। उनके जीवन से हमें मनुर्भव अर्थात् मानव बनने का संदेश मिलता है। यदि हम अपना सुधार और आत्मकल्याण करना चाहते हैं तो हमारे लिए स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन प्रकाश स्तम्भ बन सकता है। जब तक धार्मिकता और आध्यात्मिकता हमारे जीवन में नहीं आयेगी, तब तक सच्चे अर्थ में ज्ञान, वैराग्य, त्याग तथा पदत्याग की भावना नहीं आ सकेगी। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना घर-बार, पद सबकुछ ऋषि मिशन के लिए न्यौछावर कर दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस हमें जड़ता और निष्क्रियता से हटकर कुछ करने के लिए प्रेरित करता है। स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदानपुकार रहा है। उनका जीवन प्रेरित कर रहा है - आर्यो उठो ! जागो, संगठित हो जाओ। मिलकर चलो। ऋषि के मिशन को याद करो। परस्पर के विवादों और झगड़ों को त्याग कर आत्मविश्लेषण करो। हमारे ऊपर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आज चारों ओर भयंकर अविद्या, जड़ता, अंधविश्वास, ढोंग, पाखण्ड तेजी से फैल रहे हैं, वेदविद्या लुप्त होती जा रही है। धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर ढोंगी लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे है। ईश्वर के नाम पर व्यापार चल रहा है। नैतिक मूल्यों और मर्यादाओं का ह्रास हो रहा है। ऐसी विकट स्थिति में कौन देश, धर्म, जाति, संस्कृति को सही विचार, दृष्टि और सोच दे सकता है ? यदि कहीं निर्दोष, विचार- आदर्श तथा मूल्यों पर टिकती है तो वह केवल वैदिक विचारधारा है क्योंकि इसके चिन्तन में समग्रता एवं पूर्णता है।

आज समय की मांग है कि समस्त आर्यजगत् भेदभाव, विवाद और स्वार्थो को भुलाकर अपने स्वरूप, उद्देश्य और कर्त्तव्य को समझें। आर्यसमाज के अनेक महापुरुषों ने जिस वैदिक संस्कृति और विचारधारा को जीवित रखने के लिए अपने प्राणों की आहूति दी, आज वही लुप्त होती जा रही है, यह चिन्ता का विषय है। हमें स्वामी श्रद्धानन्द जी व उनके जैसे उन सैकड़ों महापुरुषों के बलिदानों को सार्थक करने के लिए पूरी लगन व परिश्रम से उनके दिखाए मार्ग पर चलकर वैदिक सभ्यता व संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए। युवाओं को नशाखोरी, समाज को पाखण्ड और अंधविश्वास, अज्ञानता जैसी बुराइयों से बचाते हुए एक आदर्श और उन्नत राष्ट्र का निर्माण करना चाहिए। यही हमारे महापुरुषों के लिए उनके बलिदान पर हमारी सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

- कुलवंत सिंह सैनी

अधर्म से होने वाले लाभ की अपेक्षा धर्म से होने वाला अलाभ श्रेयस्कर है।

सफलता का रहस्य

शमशेर सिंह

अध्यापक कक्षा में सभी बच्चों को समान भाव से पढ़ाता है लेकिन परिणाम आने पर पता चलता है कि कुछ विद्यार्थियों ने बहुत कम अंक प्राप्त किये हैं और कुछ विद्यार्थियों ने बहुत ही अच्छे अंक पाये हैं। इसका मूल कारण एक ही है कि जो विद्यार्थी एकाग्रचित्त होकर अध्यापक की बात को सुनते हैं अथवा पढ़ाये गये विषय का बार-बार अभ्यास करते हैं, वही सफलता को प्राप्त करते हैं। सभी विद्यार्थियों में एक असीम शक्ति होती है। सभी को कीर्तिमान बनाने का अवसर मिलता है। इतिहास गवाह है कि कितने विद्यार्थियों ने बचपन में ही अपनी लगन, मेहनत और साहस के बल पर असम्भव कार्य को भी सम्भव कर दिखाया है। ऐसे भी अनेक उदाहरण है कि मेहनत, लगन, दृढ़ संकल्प और साहस हो तो गरीबी भी उन्नति में बाधा नहीं बन सकती है।

लाल बहादुर शास्त्री, इब्राहिम लिंकन, थॉमस एल्वा एडीसन, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, धीरूभाई अम्बानी ऐसे उदाहरण हैं जो प्रारम्भिक परिस्थितियाँ साधारण होने पर भी ऊंचे पदों पर पहुंचे। तभी तो कहा गया है कि फूल कांटो में और लाल गुदड़ी में ही होते हैं। सफलता तो सभी चाहते हैं परन्तु उसे प्राप्त नहीं कर पाते। अपने मन को सदैव उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रमुख रखो तो सफलता अवश्य ही मिलेगी। जिस प्रकार बहुत ऊपर चढ़ने के लिए सबसे नीचे की सीढ़ी से चढ़ना होता है, ठीक उसी प्रकार पहला कदम जरूरी है। साहसी विद्यार्थी कभी असफल नहीं होते तभी तो सदैव सफलता उनकी दासी, उनके आगोश में रहती है।

सफलता के लिए सबसे पहले अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करो। कभी भी अपने अन्दर हीन भाव उत्पन्न न होने दें। स्वयं को किसी से कमजोर या कमतर न आंके। जो काम दूसरे कर सकते है वही आप भी कर सकते हैं बस उस काम को करने के लिए आपके अन्दर पूर्ण विश्वास और साहस होना चाहिए। सदैव अच्छे लोगों को अपने मित्र बनाओ, अच्छे लोगों की संगति करो। अपने माता-पिता व गुरुओं का सदैव आदर करो। भले ही कम पढ़ो मगर शान्त चित्त और एकाग्रता के साथ नियमित रूप से अध्ययन करो। पढ़ाई के साथ-साथ स्वस्थ मनोरंजन और खेलों को भी अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। यदि आप इस प्रकार से अध्ययन करेंगे तो आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। -**शमशेर सिंह,** सह-प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का श्रेष्ठ उत्पाद

स्पेशल च्यवनप्राश

घटक द्रव्य: बेल छाल, अरणी, अरलू, गम्भारी, पाटला, मुगदपर्णी, माषपर्णी, पीपल, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, काकड़ासिंगी, भूई आंवला, मुनक्का, जीवन्ती, पोहकर मूल, अगर, गिलोय, बड़ी हरड़, बला, ऋद्धि-वृद्धि, जीवक ऋषनक, कचूर, नागरमोथा, पुनर्नवा, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, छोटी इलायची, कमल, सफेद चन्दन, विदारीकन्द, अडूसा, काकनासा, अश्वगन्धा, शतावरी, आंवला, नागकेसर, लौंग, केसर, दालचीनी, तेजपात, वंशलोचन, शहद व देशी घी।

मात्रा व अनुपान : 1-1 चम्मच प्रात: सायं दूध के साथ सेवन करें।

गुण व उपयोग : ऋषि च्यवन ने इसका सेवन किया था और बूढ़े से जवान हो गये थे, इसलिए इसका नाम च्यवनप्राश हुआ। यह अग्नि और बल का विचार कर क्षीण व्यक्ति को इसका सेवन करना चाहिए। बालक, वृद्ध, क्षत-क्षीण, हृदय रोगी और क्षीण स्वर वाले व्यक्ति को इसका सेवन करने से काफी लाभ होता है। इसके सेवन से खांसी, श्वास, प्यास, छाती का जकड़ना, वातरोग, पित्तरोग, शुक्रदोष और मूत्रदोष, नष्ट हो जाते हैं। यौनशक्ति बढ़ाने में सहायक, शारीरिक वृद्धि, स्मरण शक्तिवर्धक है।

इससे कान्ति, वर्ण और प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा मनुष्य बुढ़ापा रहित हो जाता है। यह फेफड़ों को मजबूत कर हृदय को नई शक्ति प्रदान करता है। पुरानी खांसी और दमा में बहुत लाभदायक है।

मनु और गृहस्थ धर्म

*ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है। इनमें से कोई भी उपेक्षणीय या ग्रहणीय नहीं है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि अर्थ और काम के सेवन का सम्बन्ध अन्य तीनों आश्रमों में न होकर केवल गृहस्थाश्रम के साथ हैं वय, तप, त्याग और अहर्निश परोपकार-परायण जीवन बिताने के कारण संन्यास का दर्जा बेशक सबसे ऊँचा है किन्तु ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीनों आश्रम जिस एक आश्रम की बदौलत चल पाते हैं, वह केवल गृहस्थ आश्रम है। **'गुरुकुल-दर्शन'** पाठकों तक आचार्य रामदेव जी द्वारा लिखित **'गृहस्थ धर्म'** में वर्णित ज्ञान को पहुँचाने के लिए इस श्रृंखला को आरम्भ कर रहा है जिससे पाठक गृहस्थ धर्म से जुड़े अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें।*

लेखक परिचय : आचार्य रामदेव जी का जन्म 31 जुलाई 1881 को ग्राम बजवाड़ा (महात्मा हंसराज जी का गांव), होशियारपुर में हुआ था। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन किया। आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही पैदा होता है। आपने जालंधर छावनी स्थित विक्टर हाईस्कूल में हैड मास्टर के पद को सुशोभित किया, साथ ही जींद में विद्यालय निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया। महात्मा मुंशीराम जी के अनुरोध पर आप गुरुकुल कांगडी को जीवन दान करके गुरुकुल के हो गये और 1936 में आप स्वर्ग सिधारे। 'गृहस्थ-धर्म' में आपने गृह्यसूत्रों के आधार पर गृहस्थ धर्म का जैसा सांगोपांग विवेचन किया है, वह न केवल पठनीय है, बल्कि सही दिशा दिखाने वाला है। वैदिक धर्म ने गृहस्थ धर्म के पालन के लिए जैसा निर्देश दिया है, उसके अनुसार यदि समस्त मानव जाति आचरण करने लग जाए तो निस्सन्देह वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी होगी।

सन्तुष्टो भार्यया मर्त्ता भर्ता भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।
यदि हि स्त्री न रोचेत पुमांसं न प्रमोदयेत्।
अप्रमोदात् पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्त्तते।।
(मनु. अध्याय 3, श्लोक 60, 61)

अर्थ : हे गृहस्थों! जिस कुल में भार्या से प्रसन्न पति और पति से भार्या सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में निश्चित कल्याण होता है और दोनों परस्पर अप्रसन्न रहें तो उस कुल में नित्य कलह वास करता है। यदि स्त्री पुरुष पर रूचि न रखे व पुरुष को प्रहर्षित न करे तो अप्रसन्नता से पुरुष के शरीर में कमोत्पत्ति कभी न होके सन्तान नहीं होती और यदि होती है तो दुष्ट होती है।

स्त्रियान्तु रोचमानायां सर्वन्तद्रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते।।
(मनु. अध्याय 33, श्लोक 62)

अर्थ : जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न नहीं करता तो उस स्त्री के अप्रसन्न रहने से पूरा कुल अप्रसन्न, शोकातुर रहता है और जब पुरुष से स्त्री प्रसन्न रहती है तब पूरा कुल आनन्दरूप दिखता है।

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहु कल्याणमीप्सुभिः।
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।
शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा।।
जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः।।
(मनु. अध्याय 3, श्लोक 55-58)

अर्थ : पिता, भ्राता, पति और देवर को योग्य है कि अपनी कन्या, बहन, स्त्री और भौजाई आदि स्त्रियों की सदा पूजा करें, अर्थात् यथायोग्य मधुर भाषण, भोजन, वस्त्र, आभूषण, आदि से प्रसन्न रखें। जिनको कल्याण की इच्छा हो वे स्त्रियों को क्लेश कभी न देवें।

जिस कुल में नारियों की पूजा अर्थात् सत्कार होता है, उस कुल में दिव्य गुण, दिव्ययोग और उत्तम सन्तान होती है। जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वहाँ जानो उनकी सब क्रिया निष्फल है। जिस कुल में स्त्रियाँ, पुरुषों के वेश्यागमन व व्यभिचारादि दोषों से शोकातुर रहती है, वह कुल शीघ्र नाश को प्राप्त हो जाता है और जिस कुल में स्त्रियाँ पुरुषों के उत्तम आचरण से प्रसन्न रहती है, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

जिन कुलों और घरों में अपूजित अर्थात् सत्कार को न प्राप्त होकर स्त्री, जिन गृहस्थों को शाप देती है, वे कुल तथा गृहस्थ जैसे विष देकर बहुतों का एक बार नाश कर देवें वैसे चारों ओर से नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

तस्मादेताः सदा पूज्या भ्रषणच्छादनाशनैः।

अधर्म से जीने की अपेक्षा धर्म से मरना ही श्रेयस्कर है।

भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च।।

(मनु. अध्याय 3, श्लोक 56)

अर्थ : इस कारण ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले पुरुषों को योग्य है कि इन स्त्रियों को सत्कार के अवसरों और उत्सवों में भूषण, वस्त्र, खानपान आदि से पूजा अर्थात् सत्कारयुक्त प्रसन्न रखें।

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया।

(मनु. अध्याय 5, श्लोक 150)

अर्थ : स्त्री को योग्य है कि सदा आनन्दित होकर चतुरता से गृह कार्यो में वर्त्तमान रहे तथा अन्नादि के उत्तम संस्कार, पात्र, वस्त्र, गृह आदि के संस्कार और घर के भोजनादि जितना नित्य धन आदि लगे उसके यथायोग्य करने में सदा प्रसन्न रहें।

एताश्चान्याश्र लोकेऽस्मिन्नपकृष्टप्रसूतयः।
उत्कर्षं योषितः प्राप्ताः स्वैर्भर्तृगुणैः शुभैः।।

अर्थ : यदि स्त्रियाँ दुष्टाचारयुक्त भी हों तथापि इस संसार में बहुत स्त्रियाँ अपने-अपने पतियों के शुभ गुणों से उत्कृष्ट हो गई होती हैं और होंगी भी। इसलिए यदि पुरुष श्रेष्ठ हों तो स्त्रियाँ श्रेष्ठ और पुरुष दुष्ट हो तो स्त्रियाँ भी दुष्ट हो जाती है। इससे प्रथम मनुष्यों को उत्तम हो कि अपनी स्त्रियों को उत्तम करना चाहिए।

प्रजनार्थः महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन।।
उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्।
प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्री निबन्धनम्।।
अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा।
दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्च ह।।

(मनु. अध्याय 9, श्लोक 26-28)

अर्थ : हे पुरुषों! सन्तानोत्पत्ति के लिए महाभाग्योदय करनेहारी, पूजा के योग्य, गृहस्थाश्रम को प्रकाश करती, असन्तानोत्पत्ति करने-करानेहारी घरों में स्त्रियाँ हैं, वे श्री अर्थात् लक्ष्मी स्वरूप होती हैं क्योंकि लक्ष्मी शोभा, धन और स्त्रियों में कुछ भेद नहीं है।

हे पुरुषों! अपत्यों की उत्पत्ति, उत्पन्न का पालन करने आदि लोक व्यवहारों का नित्यप्रति जो कि गृहाश्रम का कार्य होता है उसका निबन्ध करने वाली प्रत्यक्ष स्त्री है।

सन्तानोत्पत्ति, धर्मकार्य, उत्तर्म सेवा और रति तथा अपना और पितरों का जितना सुख है, यह सब स्त्री ही के आधीन होता है।जैसे वायु के आश्रय से सब जीवों का वर्तमान सिद्ध होता है, वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी अर्थात् सब आश्रमों का निर्वाह होता है।

यस्मात् अयोऽप्याश्रमिणों दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।
सः संधार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः।।

(मनु. अध्याय 3, श्लोक 78-79)

सर्वेषामपि चैतेषां वेदस्मृतिविधानतः।
गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः सः त्रीनेतान् बिभर्त्ति हि।।

(मनु. अध्याय 6, श्लोक 89)

अर्थ : जिससे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी, इन तीन आश्रमियों को अन्न, वस्त्रादि दान से नित्यप्रति गृहस्थ धारण पोषण करता है, इसलिए व्यवहार में गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा है।

हे स्त्री-पुरुषों! जो तुम अक्षय मुक्ति सुख और इस संसार के सुख की इच्छा रखते हों तो जो दुर्बलेन्द्रिय और निर्बुद्धि पुरुषों के धारण करने योग्य नहीं है, उस गृहाश्रम को नित्य प्रत्यन्त से धारण करो। वेद और स्मृति के प्रमाण से सब आश्रमों के बीच में गृहाश्रम श्रेष्ठ है क्योंकि यही आश्रम ब्रह्मचारी आदि तीनों आश्रमों का धारण और पालन करता है।

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।

(मनु. अध्याय 6, श्लोक 90)

उपासते ये गृहस्थाः परपाकमबुद्धयः।
तेन ते प्रेत्य पशुतां ब्रजन्त्यन्नादिदायिनाम्।।
आसनावसथौ शैयामनुव्रज्यामुपासनाम्।
उत्तमेपृत्तमं कुर्याद्धीने हीनं सम समम्।।

(मनु. अध्याय 3, श्लोक 104,107)

पाषण्डिनो विकर्मस्थान् बैडालव्रतिकान् शठान्।
हैतुकान् बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत्।।

(मनु. अध्याय 4, श्लोक 30)

अर्थ : हे मनुष्यों! जैसे सब बड़े-बड़े नद और नदी सागर में जाकर स्थिर होते हैं, वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थ को प्राप्त होके स्थिर होते हैं। यदि गृहस्थ होके पराये घर में भोजनादि की इच्छा करते हैं तो वे बुद्धिहीन गृहस्थ अन्य से प्रतिग्रहरूप पाप करके जन्मान्तर में अन्नदि के दाताओं के पशु बनते हैं क्योंकि पाये से अन्नादि का ग्रहण करना अतिथियों का काम है, गृहस्थों का नहीं।

जब गृहस्थ के समीप अतिथि आवें, तब आसन, निवास, शैया, पश्चाद्गमन और समीप में बैठना आदि सत्कार जैसे का वैसा अर्थात् उत्तम का उत्तम, मध्ययम का मध्ययम और निकृष्ट का निकृष्ट सम्मान करें, ऐसा न हो कि कभी न समझें। किन्तु जो पाखण्डी, वेदनिन्दक, नास्तिक, ईश्वर, वेद और धर्म को न मानें, अधर्माचरण करनेहारे, हिंसक, शठ, मिथ्याभिमानी, कुतर्की और वकवृत्ति अर्थात् पराये पदार्थ हरने व बहकाने में बगुले के समान, अतिथिवेषधारी बनके आवें, उनका वचनमात्र से भी सत्कार गृहस्थी कभी न करें।

योगिराज श्रीकृष्ण का सच्चा स्वरूप

रोहिणी, दिल्ली के एक आश्रम में विरेंदर नामक आदमी अपने आपको श्रीकृष्ण बताकर मासूम लड़कियों का योन शोषण करता था। वह लड़कियों को गोपी बनने की प्रेरणा देता और 16000 लड़कियों को पतित करने का उसका लक्ष्य था। ऐसी खबरों को पढ़कर आज का युवा भ्रमित होकर भ्रमित हो जाता हैं। इसीलिए वह धर्म के स्थान पर अपने आपको नास्तिक कहने लग जाता है। कुछ लोग आर्यसमाज की श्रीकृष्ण सम्बंधित मान्यता को उचित नहीं मानते। इस लेख को पढ़कर उनके विचार अवश्य बदलेंगे। ऐसा हमारा विश्वास है। पूर्व में भी प्रशांत भूषण ने उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा चलाये जा रहे रोमियो अभियान के विरोध में श्रीकृष्णजी महाराज पर आपत्तिजनक टिप्पणी करते हुए श्रीकृष्ण जी को छेड़छाड़ करने वाला बताया है। श्रीकृष्ण जी ऐसे मिथ्या आरोप पहले भी लगते रहे है।

फिल्म रेडी की गाना ''कुड़ियों का नशा प्यारे,नशा सबसे नशीला है, जिसे देखों यहाँ वो,हुसन की बारिश में गीला है, इश्क के नाम पे करते सभी अब रासलीला है, मैं करूँ तो साला, Character ढीला है, मैं करूँ तो साला, Character ढीला है।''

सन् 2005 में उत्तर प्रदेश में पुलिस अफसर डी के पांडा राधा के रूप में सिंगार करके दफ्तर में आने लगे और कहने लगे की मुझे श्रीकृष्ण से प्यार हो गया है और में अब उनकी राधा हूँ। अमरीका से उनकी एक भगत लड़की आकर साथ रहने लग गई। उनकी पत्नी वीणा पांडा का कथन था की यह सब ढोंग है।

इस्कॉन के संस्थापक प्रभुपाद जी एवं अमरीका में धर्म गुरु दीपक चोपड़ा के अनुसार " श्रीकृष्ण को सही प्रकार से जानने के बाद ही हम वैलंटाइन डे (प्रेमिओं का दिन) के सही अर्थ को जान सकते है। इस्लाम को मानने वाले जो बहुपत्नीवाद में विश्वास करते है सदा श्रीकृष्ण जी महाराज पर 16000 रानी रखने का आरोप लगा कर उनका मखोल करते है।

इस लेख के माध्यम से हम श्रीकृष्ण जी के विषय में फैलाई जा रही भ्रांतियों का निराकरण करेंगे।

प्रसिद्ध समाज सुधारक एवं वेदों के प्रकांड पंडित स्वामी दयानंद जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण जी महाराज के बारे में लिखते है कि पूरे महाभारत में श्रीकृष्ण के चरित्र में कोई दोष नहीं मिलता एवं उन्हें आप्त (श्रेष्ठ) पुरुष कहा है। स्वामी दयानंद श्रीकृष्ण जी को महान विद्वान सदाचारी, कुशल राजनीतिज्ञ एवं सर्वथा निष्कलंक मानते है फिर श्रीकृष्ण जी के विषय में चोर, गोपिओं का जार (रमण करने वाला), कुब्जा से सम्भोग करने वाला, रणछोड़ आदि प्रसिद्ध करना उनका अपमान नहीं तो क्या है? श्रीकृष्ण जी के चरित्र के विषय में ऐसे मिथ्या आरोप का आधार क्या है? इन गंदे आरोपों का आधार है पुराण। आइये हम सप्रमाण अपने पक्ष को सिद्ध करते है।

पुराण में गोपियों से श्रीकृष्ण का रमण करने का मिथ्या वर्णन

विष्णु पुराण अंश 5 अध्याय 13 श्लोक 59-60 में लिखा है- ''वे गोपियाँ अपने पति, पिता और भाइयों के रोकने पर भी नहीं रूकती थी रोज रात्रि को वे रति 'विषय भोग' की इच्छा रखने वाली श्रीकृष्ण के साथ रमण 'भोग' किया करती थी। श्रीकृष्ण भी अपनी किशोर अवस्था का मान करते हुए रात्रि के समय उनके साथ रमण किया करते थे।''

श्रीकृष्ण उनके साथ किस प्रकार रमण करते थे पुराणों के रचियता ने श्रीकृष्ण को कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। भागवत पुराण स्कन्द 10 अध्याय 33 शलोक 17 में लिखा है- ''श्रीकृष्ण कभी उनका शरीर अपने हाथों से स्पर्श करते थे, कभी प्रेम भरी तिरछी चितवन से उनकी और देखते थे, कभी मस्त हो उनसे खुलकर हास विलास 'मजाक' करते थे। जिस प्रकार बालक तन्मय होकर अपनी परछाई से खेलता है वैसे ही मस्त होकर श्रीकृष्ण ने उन ब्रज सुंदरियों के साथ रमण, काम क्रीड़ा 'विषय भोग' किया।''

भागवत पुराण स्कन्द 10 अध्याय 29 शलोक 45-46 में लिखा है - ''श्रीकृष्ण ने जमुना के कपूर के सामान चमकीले बालू के तट पर गोपिओं के साथ प्रवेश किया। वह स्थान जलतरंगों से शीतल व कुमुदिनी की सुगंध से सुवासित था। वहां श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ रमण बाहें फैलाना, आलिंगन करना, गोपियों के हाथ दबाना , उनकी छोटी पकड़ना, मजाक करना नाखूनों से उनके अंगों को नोच नोच कर जख्मी करना, विनोदपूर्ण चितवन से देखना और मुस्कराना तथा इन क्रियाओं के द्वारा नवयोवना गोपिओं को खूब जागृत करके उनके साथ श्रीकृष्ण ने रात में रमण (विषय भोग)किया।''

ऐसे अभद्र विचार श्रीकृष्ण जी महाराज को कलंकित करने के लिए भागवत के रचियता नें स्कन्द 10 के अध्याय 29,33 में वर्णित किये है जिसका सामाजिक मर्यादा का पालन करते हुए मैं वर्णन नहीं कर रहा हूँ।

राधा और श्रीकृष्ण का पुराणों में वर्णन

राधा का नाम श्रीकृष्ण के साथ में लिया जाता है। महाभारत में राधा का वर्णन तक नहीं मिलता। राधा का वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण में अत्यंत अशोभनिय वृतांत का वर्णन करते हुए मिलता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्ण जन्म खंड अध्याय 3 श्लोक 59-62 में लिखा है कि गोलोक में श्रीकृष्ण की पत्नी राधा ने श्रीकृष्ण को

पराई औरत के साथ पकड़ लिया तो शाप देकर कहा – हे श्रीकृष्ण ब्रज के प्यारे , तू मेरे सामने से चला जा तू मुझे क्यों दु:ख देता है। हे चंचल , हे अति लम्पट कामचोर मैंने तुझे जान लिया है। तू मेरे घर से चला जा। तू मनुष्यों की भांति मैथुन करने में लम्पट है, तुझे मनुष्यों की योनि मिले, तू गौलोक से भारत में चला जा। हे सुशीले, हे शशिकले, हे पद्मावती, हे माधवों! यह श्रीकृष्ण धूर्त है इसे निकल कर बहार करो, इसका यहाँ कोई काम नहीं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्ण जन्म खंड अध्याय 15 में राधा का श्रीकृष्ण से रमण का अत्यंत अश्लील वर्णन लिखा है जिसका सामाजिक मर्यादा का पालन करते हुए मैं यहाँ विस्तार से वर्णन नहीं कर रहा हूँ।

ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्ण जन्म खंड अध्याय 72 में कुब्जा का श्रीकृष्ण के साथ सम्भोग भी अत्यंत अश्लील रूप में वर्णित है।

राधा का श्रीकृष्ण के साथ सम्बन्ध भी भ्रामक है। राधा श्रीकृष्ण के बामांग से पैदा होने के कारण श्रीकृष्ण की पुत्री थी अथवा रायण से विवाह होने से श्रीकृष्ण की पुत्रवधू थी चूँकि गोलोक में रायण श्रीकृष्ण के अंश से पैदा हुआ था इसलिए श्रीकृष्ण का पुत्र हुआ जबकि पृथ्वी पर रायण श्रीकृष्ण की माता यशोदा का भाई था इसलिए श्रीकृष्ण का मामा हुआ जिससे राधा श्रीकृष्ण की मामी हुई।

श्रीकृष्ण की गोपिओं कौन थी?

पदम् पुराण उत्तर खंड अध्याय 245 कलकत्ता से प्रकाशित में लिखा है कि रामचंद्र जी दंडक –अरण्य वन में जब पहुचें तो उनके सुंदर स्वरुप को देखकर वहां के निवासी सारे ऋषि–मुनि उनसे भोग करने की इच्छा करने लगे। उन सारे ऋषिओं ने द्वापर के अंत में गोपियों के रूप में जन्म लिया और रामचंद्र जी श्रीकृष्ण बने तब उन गोपियों के साथ श्रीकृष्ण ने भोग किया। इससे उन गोपियों का मोक्ष हो गया। अन्यथा अन्य प्रकार से उनकी संसार रुपी भवसागर से मुक्ति कभी न होती। क्या गोपियों की उत्पत्ति का यह दृष्टान्त बुद्धि से स्वीकार किया जा सकता है?

श्रीकृष्ण जी महाराज का वास्तविक रूप

अभी तक हम पुराणों में वर्णित गोपियों के दुलारे, राधा के पति, रासलीला रचाने वाले श्रीकृष्ण के विषय में पढ़ रहे थे जो निश्चित रूप से असत्य है।

अब हम योगिराज, नीतिनिपुण, महान कूटनीतिज्ञ श्रीकृष्ण जी महाराज के विषय में उनके सत्य रूप को जानेगे।

आनंदमठ एवं वन्दे मातरम के रचियता बंकिम चन्द्र चटर्जी (जिन्होंने 36 वर्ष तक महाभारत पर अनुसन्धान कर श्रीकृष्ण जी महाराज पर उत्तम ग्रन्थ लिखा) ने कहा है कि महाभारत के अनुसार श्रीकृष्ण जी की केवल एक ही पत्नी थी, जो रुक्मणी थी। उनकी 2, 3 या 16000 पत्नियाँ होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। रुक्मणी से विवाह के पश्चात श्रीकृष्ण रुक्मणी के साथ बदरिक आश्रम चले गए और 12 वर्ष तक तप एवं ब्रह्मचर्य का पालन करने के पश्चात उनका एक पुत्र हुआ जिसका नाम प्रद्युमन था. यह श्रीकृष्ण के चरित्र के साथ अन्याय हैं की उनका नाम 16000 गोपियों के साथ जोड़ा जाता है। महाभारत के श्रीकृष्ण जैसा अलौकिक पुरुष, जिसने कोई पाप नहीं किया और जिस जैसा इस पूरी पृथ्वी पर कभी–कभी जन्म लेता है। स्वामी दयानद जी सत्यार्थ प्रकाश में वही कथन लिखते है जैसा बंकिम चन्द्र चटर्जी ने कहा है। पांडवों द्वारा जब राजसूय यज्ञ किया गया तो श्रीकृष्ण जी महाराज को यज्ञ का सर्वप्रथम अर्घ प्रदान करने के लिए सबसे ज्यादा उपर्युक्त समझा गया जबकि वहां पर अनेक ऋषि–मुनि , साधु–महात्मा आदि उपस्थित थे। वहीं श्रीकृष्ण जी महाराज की श्रेष्ठता समझे कि उन्होंने सभी आगंतुक अतिथियो के धूल भरे पैर धोने का कार्य भार लिया। श्रीकृष्ण जी महाराज को सबसे बड़ा कूटनितिज्ञ भी इसीलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने बिना हथियार उठाये न केवल दुष्ट कौरव सेना का नाश कर दिया बल्कि धर्म की राह पर चल रहे पांडवो को विजय भी दिलवाई।

ऐसे महान व्यक्तित्व पर चोर, लम्पट, रणछोर, व्यभिचारी, चरित्रहीन , कुब्जा से समागम करने वाला आदि कहना अन्याय नहीं तो और क्या है और इस सभी मिथ्या बातों का श्रेय पुराणों को जाता है। इसलिए महान् श्रीकृष्ण जी महाराज पर कोई व्यर्थ का आक्षेप न लगायें एवं साधारण जनों को श्रीकृष्ण जी महाराज के असली व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने के लिए पुराणों का बहिष्कार और वेदों का प्रचार अति आवश्यक है। फिर भी अगर कोई न माने तो उन पर यह लोकोक्ति लागु होती हैं– जब उल्लू को दिन में न दिखे तो उसमें सूर्य का क्या दोष है? प्रोफेसर उत्तम चन्द शरर जन्माष्टमी पर सुनाया करते थे –

तुम और हम हम कहते हैं आदर्श था इन्सान था मोहन ।
तुम कहते हो अवतार था, भगवान था मोहन ।।
हम कहते हैं कि श्रीकृष्ण था पैगम्बरो हादी ।
तुम कहते हो कपड़ों के चुराने का था आदि ।।
हम कहते हैं जां योग पे शैदाई थी उसकी ।
तुम कहते हो कुब्जा से शनासाई थी उसकी ।।
हम कहते है सत्यधर्मी था गीता का रचौया ।
तुम साफ सुनाते हो कि चोर था कन्हैया ।।
हम रास रचाने में खुदायी ही न समझे ।
तुम रास रचाने में बुराई ही न समझे ।।
इन्साफ से कहना कि वह इन्सान है अच्छा ।
या पाप में डूबा हुआ भगवान है अच्छा ।।

– डॉ. विवेक आर्य

मित्र बनाना सर्वथा सहज है, मित्रता निभाना कठिन है।

मेरे ईश्वर सबसे महान् है

मनमोहन आर्य

इससे पूर्व कि हम ईश्वर की महानता की चर्चा करें, हम यह जान लें कि ईश्वर है क्या? ईश्वर वह है जो इस संसार की रचना करता है, इसका पालन करता है और अवधि पूरी होने पर इसकी प्रलय करता है। यह कार्य स्वत: नहीं हो सकता। जड़ पदार्थों में स्वमेव किसी उद्देश्यपूर्ण रचना करने की क्षमता वा सामर्थ्य नहीं होती। कोई भी ज्ञानपूर्ण रचना किसी चेतन सत्ता के द्वारा ही होती है जिसे उसका ज्ञान, अनुभव होने के साथ उसके निर्माण की शक्ति व सामर्थ्य भी उसमें हो। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ आदि गुणों वा स्वरूप वाला है। उसके पास सृष्टि रचना, पालन व प्रलय करने का ज्ञान भी है, अनुभव और सामर्थ्य भी है। अत: ईश्वर अपने सहज स्वभाव से इस सृष्टि की रचना कर इसका संचालन करता है।

हमारा यह ईश्वर महान् किस कारण से है? इसका उत्तर हमें यह लगता है कि इस वृहद् संसार को बनाकर ईश्वर ने संसार के सभी जीवों, मनुष्यों एवं प्राणिमात्र पर महान उपकार किया है। माता-पिता अपनी सन्तानों के लिए घर बनाते हैं व उनका भोजन एवं शिक्षा द्वारा पालन करते हैं। इससे वह महान कहलाते हैं। माता-पिता तो केवल एक से तीन चार सन्तानों व कई मामलों में कुछ अधिक भी सन्तानों का पालन करते हैं परन्तु सृष्टिकर्ता ईश्वर तो अनन्त जीवों के सुख के लिए इस महान संसार को बनाता है व सभी को उनके कर्मानुसार एक-एक शरीर देकर उन्हें भोजन, बल, ज्ञान, ज्ञानेन्द्रिय व कर्मेन्द्रियों द्वारा सुख प्रदान करता है। हमारी यह सृष्टि जिसमें सूर्य, पृथिवी, चन्द्र व अन्य ग्रह आदि अनन्त संख्या में है, ईश्वर ने ही बनाई है।

यह पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रही है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। हमें यह पता भी नहीं चलता कि हम 30 किमी. प्रति सेकण्ड अर्थात् 1800 किमी. प्रति मिनट या 1,08,000 किमी. प्रति घंटा की गति से सूर्य की ओर पृथ्वी रूपी बस में बैठे हुए यात्रा कर रहे हैं। एक दिन में हम बिना कुछ किये ही 25,92,000 किमी. की यात्रा करते हैं और हमें इसका अहसास भी नहीं होता जबकि यदि हमें बस में एक घंटा ही यात्रा करनी पड़े तो हमें थकान अनुभव होती है। हमारी यह यात्रा जन्म के दिन से ही आरम्भ हुई थी और मृत्यु के दिन तक जारी रहेगी। इससे भी अनुमान लगता है कि वह ईश्वर कितना महान है जो हमें प्रतिदिन 25.92 लाख किमी. की यात्रा कराता है। हम पृथ्वी रूपी मां की गोद, बस या रेलगाड़ी में बैठे हुए यात्रा कर रहे होते हैं और जीवन भर सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं। इससे यह भी सन्देश मिलता है कि जिस प्रकार पृथ्वी अपने पिता सूर्य की परिक्रमा निरन्तर करती रहती है उसी प्रकार हमें भी अपने माता-पिता उस ईश्वर की ध्यान आदि साधनों के द्वारा निरन्तर उपासना रूपी परिक्रमा करनी चाहिये। इनसे विचार सबसे महान सिद्ध होता है।

ईश्वर ने न केवल इस सृष्टि को बनाया है एवं वह इसका पालन कर रहा है अपितु उसने इस सृष्टि में ऋतुओं को भी बनाया है। समय पर वर्षा होती है। पर्वतों पर हिमपात होता है। उससे जल बनता है और नदियां बहती हैं जो हमारे खेतों की सिंचाई ही नहीं करती अपितु हमें पीने के लिए जल भी प्रदान करती हैं। वृक्ष हमें प्राण वायु देते हैं। अग्नि जब हमारे शरीर के भीतर होती है तो वह हमारे भोजन को पचाती है तथा हमारे प्राणों के द्वारा शुद्ध वायु को पूरे शरीर में पहुंचाती हैं। अशुद्ध वायु बाहर आती है तो वह भी परमात्मा द्वारा बनाये गये हमारे प्राणों द्वारा ही सम्भव होता है। इसी प्रकार से इस सृष्टि में परमात्मा ने हमारे सुख व उपभोग के लिए नाना प्रकार के पदार्थ बना रखे हैं जो हमें उसकी ओर से नि:शुल्क प्राप्त होते हैं। इन कार्यों से भी परमात्मा महान सिद्ध होता है क्योंकि ऐसे कार्य अन्य कोई नहीं कर सकता।

हम जीवात्मा हैं और हमारी जैसी जीवात्मायें ही सभी प्राणियों में विद्यमान हैं। हमारे जो शरीर हैं वह हमारे पूर्व जन्म के कर्मानुसार अर्थात प्रारब्ध के अनुसार परमात्मा ने हमें बनाकर दिये हैं। हमें जो माता-पिता, आचार्य एवं कुटुम्बीजन प्राप्त होते हैं उन्हें भी परमात्मा ही हमें प्राप्त कराता है। हमारे शरीर की रक्षा के लिए भी परमात्मा ने प्रबन्ध कर रखे हैं। परमात्मा ने हमारा व अन्य प्राणियों का शरीर ऐसा बनाया है कि यह बहुत कम रुग्ण होता है। यदि कभी होता भी है तो इसका कारण हमारा कुपथ्य करना होता है। इस पर भी परमात्मा ने हमें स्वस्थ करने के लिए प्राय: सभी रोगों की औषधियां सृष्टि में उत्पन्न कर रखी हैं। यह बात और हैं कि हम वेद और आयुर्वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन कर नई नई औषधियों की खोज नहीं करते।

यदि हमने प्रयत्न किये होते तो कोई कारण नहीं कि हमारे पास सभी रोगों की औषधियां होती। आज भी हम प्रयत्न करें तो सभी

रोगों की चिकित्सा सम्भव है। हमें स्वस्थ रहने के लिए अल्प मात्रा में पौष्टिक भोजन करने सहित व्यायाम, योगाभ्यास व ध्यान आदि क्रियाओं पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। इससे हमें यह लाभ होगा कि हम रोगी नहीं होंगे और स्वस्थ रहते हुए दीर्घायु को प्राप्त करेंगे। पर्यावरण को शुद्ध रखना सभी का कर्तव्य है। जो प्रदुषण करता है वह पाप करता है। हमें ऐसी नयी व्यवस्था का निर्माण करना है जिसमें वायु प्रदुषण आदि न हो, तभी यह देश व विश्व रोगरहित व दु:खों से मुक्त होकर स्वस्थ हो सकता है।

परमात्मा की एक अन्य कृपा सभी मनुष्यों पर और भी है। वह यह है कि उसने सृष्टि की आदि में चार वेदों का ज्ञान दिया था। सृष्टि की उत्पत्ति से अब तक 1.96 अरब वर्षों का समय बीत जाने पर भी वेद ज्ञान आज भी सुरक्षित है। इससे हमें ईश्वर व जीवात्मा सहित सृष्टि का भी यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। हमारा जन्म क्यों हुआ, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, जीवन के लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के साधन क्या हैं, हमें अपना जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिये, ईश्वर उपासना कैसे व क्यों करें तथा उपासना से हमें क्या लाभ होता है, परोपकार व सेवा की महिमा आदि सभी पर वेद, वेदांग और उपांगों में हमें मार्गदर्शन दिया गया है। ऋषि दयानन्द ने विद्या प्राप्त कर अपना जीवन पूर्ण वैदिक रीति से व्यतीत कर हमारे सामने आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। हमें भी उस आदर्श के अनुरूप स्वयं को बनाना है। बनायेंगे तो लाभ में रहेंगे और नहीं बनायेंगे तो हमें हानि उठानी होगी। ईश्वर का हर कार्य व पुरुषार्थ जीवात्माओं के सुख लाभ के लिए होता दिखाई देता है। वह एक, दो या तीन सन्तानों का नहीं अनन्त जीवात्माओं का माता-पिता व आचार्य है व सबके साथ न्याय का व्यवहार करता है। सज्जनों को सुख व दुष्टों को दण्ड देता है। अत: उस ईश्वर जैसा कोई महान नहीं हो सकता और न अन्य किसी के ईश्वर के समान महान होने की कल्पना ही की जा सकती है। अत: मेरा और हम सबका ईश्वर सबसे महान पुरुष है। वह अन्धकार से रहित और सूर्य के समान प्रकाशमान है। उसी को जानकर हम मृत्यु रूपी दु:ख पर विजय प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं। दु:खों से मुक्त होने व मोक्ष प्राप्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। हमें अपने जीवन का पर्याप्त समय वेदाध्ययन व वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते हुए वेद प्रचार में लगाना चाहिये। ऐसा करके ही हम महान ईश्वर के सच्चे पुत्र व पुत्री कहे जा सकते हैं। ओ३म् शम्। – **मनमोहन कुमार आर्य**

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून 20081, मो-9412985121

आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र' का भव्य स्वरूप

आर्यसमाज अपने स्थापना काल से ही सामाजिक रूढ़ियों, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुड़मवाद पर कड़ा प्रहार करता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहाँ तपस्वी विद्वानों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर भारतीय संस्कृति के आधार वेद का प्रचार-प्रसार करने में अपनी कोई लाभ-हानि नहीं देखी, वहीं गीत, भजन व उपदेश के माध्यम से दादा बस्तीराम जी, चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क जी, मंगल वैद्य जी, स्वामी भीष्म जी जैसे अनेक भजनोपदेशकों ने अपनी जान हथेली पर रख कर वेद का प्रचार-प्रसार किया।

आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश के मन में हमेशा से ही यह भाव रहा है कि गांव, देहात में वेद का प्रारम्भिक प्रचार भजनोपदेशक के माध्यम से जितना कारगर हो सकता है उतना अन्य से नहीं। इसी भावना को मन में रखते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में **'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र'** की स्थापना की गई है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत् प्रशिक्षण **01 अप्रैल 2017** से प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति है उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क रहेगी। प्रशिक्षण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। इच्छुक युवा व महानुभाव सम्पर्क करें :-

कुलवंत सिंह सैनी, प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र
मोबाइल - 9996026304

नन्दकिशोर आर्य,
मो-94664 36220, 86890 01220

गुरुकुल कार्यालय,
01744-238048, 238648

AN INDIAN SOLDIER : THE REAL HERO

An Indian *Soldier is known for his sense of duty and dedication. He is a true patriot. He is perfectly disciplined and decent in his ways. He is always ready to accept any challenge any time and in any part of the country. He always maintains the true traditions of the great Indian army. He obeys the orders of the superiors and doesn't question to their decisions. He is loyal to the country. He works in sun or shine, snow or shower without any complaint and hesitation. He is all time on duty. A soldier has to live miles away from his family. His life is not a bed of roses, it is a bed of thorns even then defense of country is most important for him. A soldier lives for the nation and dies for its dignity. A soldier is the pride of his nation. He defends the honor of his motherland with his life and blood. He has to rise above his own self to defend his nation. A soldier is recruited on the basis of physical fitness and necessary age and education. The selection is very strict. After selection, he goes to one of the training centers to get military training. In the training center he gets basic military training like drill, physical training and weapon training. He is trained in range practices, bayonet-fighting and handling of explosives like grenades and mortars.*

The *Indian soldier is famous for his high moral and high standard of discipline and for his matchless valour. He defends our country. He saves us from the external aggression. In peace time he does many social services. In war time he dedicates his life for the country. A soldier also helps the civilian population during natural calamities such as earth-quake, cyclones, floods etc. He has to be mentally and physically alert and keeps his body in fine shape for any battles that may come up.*

Every *Indian contributes some things as far as the defense of India is concerned. But the role which a soldier plays in defending and protecting the borders of India is really unparalleled. No doubt a soldier's life is very difficult and hard. A soldier keeps night long vigils on the borders even in the face of great dangers. He stands heroically before enemies. A soldier faces death bravely. He fights up to the last moment of his life in order to protect his motherland. He sacrifices everything for the sake of the nation.*

Pradeep Tyagi

In fact *the contribution of a soldier is most important, uncountable and unique to protect our country. If we are taking breath of freedom it is just because of our soldiers. A soldier faces a lot of difficulties on the borders for saving us. He always lives in the jaws of death even then he always thinks about the honor and dignity of the nation. We should never forget the dedication, valour and contribution of a soldier. A soldier is always respected for his dedication, discipline and patriotism. His life is a source of inspiration to the youth of the nation. He has no politics in his makeup. He serves the nation to the best of his ability.*

The word *soldier says a lot .Let's think about the life of a soldier. He leaves his family and friends behind and fights for his country .When all are asleep soldiers stay awake for the safety of their citizens .The word soldier gives us a selfless feeling .He always strives for the safety and security of others. They make sure that we sleep in peace, when they are wide awake. We never forget to laud the cricketers, actors, the politicians, but do we appreciate a soldier in the true sense!!!!Have we ever thought of taking an autograph from a soldier? So as a token of our love and for a change let's take an autograph from a soldier! A Soldier is a real Hero. "Jai Hind", "Jai Bharat"....*

- **Pradeep Tyagi**
Warden, Gurukul KKR

अग्निहोत्र और इसके लाभ

वैदिक धर्मी आर्यों के पांच दैनिक कर्तव्य हैं जिन्हें ऋषि दयानन्द जी ने भी पंचमहायज्ञ नाम से स्वीकार किया है। उन्होंने पंचमहायज्ञविधि नाम से एक पुस्तक भी लिखी है। संस्कार विधि में इन यज्ञों का विधान किया गया है। स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में सन्ध्या एवं देवयज्ञ अग्निहोत्र की चर्चा एवं इसके समर्थन में विज्ञान की दृष्टि से विचार प्रस्तुत किये हैं। हम यहां दैनिक देवयज्ञ की चर्चा कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि सभी परोपकार के कार्यों को यज्ञ कहा जाता है। जिन कार्यों से मनुष्य व प्राणीमात्र अथवा समाज को लाभ होता है वह कार्य यथा ईश्वर को जानकर सन्ध्या-उपासना करना एवं वातावरण को स्वच्छ रखते हुए समाजोत्थान के कार्यों में संलग्न होना, ऐसे सभी कार्य भी यज्ञ के अन्तर्गत आते हैं। देवयज्ञ में यज्ञकुण्ड, यज्ञ समिधा, गोघृत व मिष्ट, सुगन्धित एवं औषधि आदि द्रव्यों से निर्मित पदार्थों वा हवन सामग्री का प्रयोग किया जाता है। घृत एवं हवन सामग्री को वेदमंत्रोच्चार के साथ मन्त्र के अन्त में स्वाहा बोल कर यज्ञकुण्ड की अग्नि में आहुति देते हैं जिससे हम नासिका साधन से सुगन्ध का अनुभव करते हैं। इसका अर्थ यह होता है कि हमने घृत व हवन सामग्री की जो आहुति यज्ञकुण्ड में डाली है वह सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल गई है जिसका प्रभाव सुगन्ध के रूप में हमें अनुभव होता है।

ऋषि दयानन्द जी ने कहा है कि यज्ञ करने से दुर्गन्ध का नाश होता है। यह प्रत्यक्ष अनुभव ज्ञान व अज्ञानी सभी मनुष्यों को होता है। सुगन्ध स्वास्थ्य के लिए हितकर होती है और दुर्गन्ध व प्रदुषित वायु स्वास्थ्य के लिए अहितकार होती है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि हमारे रोगों का नाश हो रहा है और हम स्वस्थ हो रहे हैं। स्वस्थ मनुष्य यह अनुभव करते हैं कि हम भावी जीवन में रोगों से लड़ने की शक्ति अपने शरीर के भीतर संग्रह कर रहे हैं जिससे हम स्वस्थ रहेंगे और रोगों से पीड़ित नहीं हांगे। ऋषि दयानन्द जी ने अपने साहित्य में यह भी लिखा है कि जब तक भारत में यज्ञों का प्रचार व प्रचलन था, यहां रोग नहीं होते थे या बहुत कम होते थे। आज भी यदि सभी लोग वा अधिक से अधिक लोग यज्ञ करना आरम्भ कर दें तो देश पूर्व काल के समान रोगरहित हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने जो बातें यज्ञ विषयक कहीं हैं वह विचार करने पर सत्य एवं प्रामाणिक सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द के जीवन का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि वह केवल वेद और वैदिक साहित्य का ही पाण्डित्य नहीं रखते थे अपितु ज्ञान व विज्ञान में भी उनकी गहरी पहुंच थी। उन्होंने जो भी बात कही व लिखी है वह सभी अकाट्य युक्तियों, प्रमाणों से पुष्ट एवं विज्ञान की मान्यताओं व सिद्धान्तों मुख्यत: तर्क व अनुमान आदि से सिद्ध होती हैं। अत: देश व समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को यज्ञ पर अपना ध्यान केन्द्रित कर अनुसंधान, शोध व चिन्तन कर इसके सभी पक्षों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिये। यज्ञ पर जितना वैज्ञानिक कार्य होना था, किन्हीं कारणों से केन्द्र व राज्य सरकारों ने उसकी उपेक्षा की गई है। ऐसा वोट बैंक की नीति के कारण से होता है। सभी दल एक ही वर्ग को सन्तुष्ट करने व उनके ही हितों की बात करते हैं। इसी कारण वेद व यज्ञ की भी उपेक्षा की गई है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में देश विदेश के वैज्ञानिक यज्ञ विषयक अधिकाधिक अनुसंधान व शोध करेंगे जिससे समाज व संसार के लोग यज्ञ के लाभों से लाभान्वित हो सकेंगे।

वैदिक मान्यताओं के अनुसार अग्निहोत्र यज्ञ को प्रत्येक गृहस्थी के लिए प्रतिदिन प्रात: व सायं करना अनिवार्य है। इससे उनके स्वास्थ्य की रोगों से रक्षा होती है। ऐसा इस प्रकार होता है कि घरों में यज्ञ करने से यज्ञ की गर्मी से उसके सम्पर्क में आने वाली वायु गर्म होकर हल्की हो जाती है ओर ऊपर को गमन करती है। ऊपर की अधिक घनत्व की किंचित ठण्डी वायु नीचे आती है जो अग्निहोत्र वा हवन के सम्पर्क में आकर गर्म होकर ऊपर चली जाती है। इस प्रकार से ऊपर की वायु नीचे और नीचे की ऊपर आती जाती रहती है और इस प्रकार से पूरे कमरे व घर की वायु बाहर की तुलना में गर्म होने से हल्की होकर घर से बाहर चली जाती है और बाहर की शुद्ध वायु भीतर घर में प्रवेश करती जाती है। घर के भीतर की वायु श्वास-प्रश्वास व रसोईघर में भोजन पकाये

जाने के कारण व घर की वायु के बाहर न जाने के कारण दूषित होकर वहां रहने वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। इस प्रकार से हवन वा अग्निहोत्र करने से घर के भीतर की अशद्ध वायु शुद्ध हो जाती है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसे ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत कर यज्ञ के वैज्ञानिक लाभ से पाठकों को परिचित कराया है।

गीता में एक श्लोक में कहा गया है कि यज्ञ के धूम्र से बादल बनते हैं और बादलों से वर्षा होती है। वर्षा से खेतों में अन्न, फल, ओषधियां व वनस्पतियां उत्पन्न होती हैं। इन्हें भोजन के रूप में प्रयोग करने से मनुष्य के शरीर में अनेक पदार्थ बनते हैं जिनमें से एक तत्व वीर्य व आर्तव होता जिससे सन्तानों का जन्म होता है। इस मनुष्य जन्म से ही यह संसार सृष्टि के आरम्भ से अब तक चला आ रहा है। अत: यज्ञ से वर्षा का होना एक अतीव महत्वपूर्ण बात है। एक वेदमंत्र में ईश्वर ने बताया है कि जब जब यज्ञकर्ता चाहें तब तब बादल आयें और इच्छानुसार वर्षा करें। आर्य समाज में कीर्तिशेष पं. वीरसेन वेदश्रमी जी आदि विद्वान हुए हैं जिन्होंने सूखा पड़ने पर कुछ स्थानों पर यज्ञ से वर्षा कराई थी। स्वामी विद्यानन्द विदेह ने एक वृष्टि यज्ञ पद्धति नामक ग्रन्थ भी वर्षा न होने पर यज्ञ द्वारा वर्षा कराने पर लिखा है। यह देखा गया है कि जब वर्षा नहीं होती तो रोग बढ़ जाते हैं और वर्षा होने पर रोग कम होते हैं। बहुत से रोग वर्षा के होने पर ठीक भी हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि यदि वायु वा बादलों में यज्ञ के घृत व हवन सामग्री का अंश अधिक होगा तो उससे स्वास्थ्य उत्तम होगा और अन्न की गुणवत्ता भी कहीं अधिक होगी।

यज्ञ करने से साध्य और असाध्य रोग दोनों प्रकार के रोग ठीक होते हैं। यज्ञ में एक मन्त्र '**अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च न:**' आता है। इसमें कहा गया है कि प्राणों का प्राण परमात्मा हमारे जीवन की रक्षा करता है और हमें बल व अन्नादि प्राप्त कराता है। वह परमात्मा दुष्ट जीव-जन्तुओं से हमारी रक्षा भी करता है। हम जानते हैं कि रोगों का एक कारण कृमी वा सूक्ष्म कीटाणु होते हैं जिन्हें बैक्टिरिया कहते हैं। यज्ञ करने से वह नष्ट हो जाते हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं यज्ञ के धूम का प्रभाव हमारे शरीर के बाहर तो होता ही है, इसके अतिरिक्त श्वांस द्वारा हम जो प्राण भीतर लेते हैं उससे यज्ञ का प्रभाव और शुद्ध वायु हमारे भीतर पहुंचता है। इस प्रकार यज्ञ की अग्नि गोघृत व औषधियुक्त सामग्री के सूक्ष्म कणों से हमारे शरीर की भीतर व बाहर से चिकित्सा करती हुई प्रतीत होती है। हम समझते हैं कि स्वस्थ व्यक्तियों को यज्ञ अवश्य करना चाहिये जिससे वायु व जल आदि में विद्यमान रोग के किटाणु हमारे शरीर पर दुष्प्रभाव उत्पन्न न कर सके। रोग हो जाने पर उनके निवारण में कठिनता होती है। पाठक इस विषय में स्वयं भी विचार कर सकते हैं।

यज्ञ में हम जो वेदमंत्र बोलते हैं उसमें जीवन को शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक सभी प्रकार के स्वास्थ्य की कामना की गई है। मन्त्रों में यह भी कहा गया है कि हम भौतिक पदार्थों से भी सम्पन्न व समृद्ध हों। आर्यसमाज के एक विद्वान श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी तो एक प्रवचन ही इस बात का देते हैं कि जो यज्ञ करता है वह दरिद्र न होकर सुखी व समृद्ध होता है। हमने देहरादून के तपोवन आश्रम में दिये हुए उनके अनेक प्रवचनों को कई बार प्रस्तुत किया है जो पूर्णतया युक्ति संगत होते हैं। हमारा अपना मानना भी यही है कि यज्ञ से निर्धनता व अज्ञानता समाप्त होती है। मनुष्य सद्विचारों से पुष्ट होता है और जीवन में उन्नति को प्राप्त होता है।

हम यह भी अनुभव करते हैं कि वेदमंत्रों में जो प्रार्थनायें की गई हैं वह सभी यज्ञ करने से पूर्ण होती है। भोपाल गैस काण्ड में जहां सहस्रों लोग गैस के दुष्प्रभाव से मरे थे वहीं एक याज्ञिक परिवार इस कारण बच गया था कि वह प्रतिदिन यज्ञ करता था। उस यज्ञकर्ता का अपना परिवार ही उस विषैली गैस के दुष्प्रभाव से नहीं बचा था अपितु उसके पशुओं पर गैस का दुष्प्रभाव नहीं हुआ था। हम भी एक बार गम्भीर दुर्घटना होने पर पूर्णतया सुरक्षित बचे हैं। उस समय हमारे एक मित्र जो आर्यसमाजी नहीं थे, उन्होंने जब अन्यों से दुर्घटना की भीषणता को सुना तो हमें कहा था कि हम इस लिए बचे हैं कि हम यज्ञ करते व कराते थे। उनकी यह बात हमें उचित प्रतीत हुई थी और हमने सोचा कि उन्होंने यह बात शायद ईश्वर की प्रेरणा द्वारा ही न कही हो। ऐसे उदाहरण यज्ञ करने वाले सभी मनुष्यों के जीवन में मिल सकते हैं। हमारे एक मित्र व उनकी पत्नी अतीत में कुष्ट रोगी रहे हैं। उन्होंने अपने परिवार की एक लड़की का पालन किया है। आज वह बैंक में अधिकारी है। उनकी एक छोटे से कमरे की कुटिया में हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरी आ चुके हैं। अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति आ चुके हैं। आपका यश पूरी संस्था में छाया हुआ है। सभी उनकी विद्वता से प्रभावित हैं। हमें तो इसके पीछे उनकी ईशभक्ति, वेदाध्ययन, वेदप्रेम और आर्यसमाज के प्रति अनुराग तथा यज्ञ का प्रभाव ही अनुभव होता है।

यहां हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि यदि कुछ भाई दैनिक यज्ञ अग्निहोत्र नहीं कर पाते हैं तो वह यज्ञ के सभी मन्त्रों का मौन व शाब्दिक उच्चारण कर मानस यज्ञ ही कर लिया करें। इतने मात्र से भी उन्हें कुछ लाभ अवश्य होगा। यज्ञ करने से आध्यात्मिक लाभ भी होते हैं। यज्ञ करने से यज्ञकर्ता दैवीय गुणों से युक्त होकर देव हो जाता है। इससे काम, क्रोध, लोभ आदि नियंत्रित हो जाते हैं। हम पाठकों से निवेदन करते हैं कि वह यज्ञ अवश्य करें। इससे उन्हें हानि तो कोई नहीं होगी, भावी जीवन में लाभ अवश्य ही होंगे जिन्हें उनकी आत्मा स्वीकार करेगी। यज्ञ करने से वह स्वस्थ रहेंगे और उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी होगी, ऐसा हमारा अनुभव है।

पति-पत्नी मिलकर गृहस्थ को सुखी बनाएं

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद में तृण से लेकर परमेश्वर तक का ज्ञान परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही चार ऋषियों के माध्यम से प्रदान कर दिया था ताकि संसार में वेद के आलोक में जीवन यापन करके ही व्यक्ति इहलोक व परलोक की उन्नति करता हुआ अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सके।

वेद में गृहस्थ को सुखी बनाने के अनेक मंत्र हैं मगर यहाँ पर हम पति-पत्नी के गुणों का थोड़ा- सा दिग्दर्शन कर रहे हैं। यह वैदिक दर्शन की अपनी विशेषता है कि पत्नी को भी वेद में बहुत ही सम्मानजनक स्थान पर माना गया है। यजुर्वेद में एक मंत्र आया है -

इडऽह्यदितऽऐहि। असावेह्यसावेह्यसावेहि।।

(यजुर्वेद 38/2)

मंत्र में पति कह रहा है कि हे इडे एहि! (हे इडे!) तू मुझे प्राप्त हो। (इडा से तात्पर्य है मानवी अर्थात् मनुपुत्री) इस प्रकार पत्नी का पहला गुण बताया गया है कि वह मानवी हो- मनु की पुत्री अर्थात् समझदार हो। एक समझदार पत्नी में पतिसेवा, सन्तान निर्माण, मधुरभाषिणी, संवेदनशीलता, सेवा तथा साधना आदि समस्त गुण स्वाभाविक रूप से ही होते हैं।

वेद में दूसरा गुण कहा गया है यज्ञानुकाशिनी अर्थात् अपने जीवन को यज्ञ से प्रकाशित करने वाली हो। उसके गृहस्थ में प्रतिदिन यज्ञ हो तथा उसका जीवन यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण हो।

तीसरा गुण है -अदिते ऐहि-(अदीना देवमाता) अर्थात् कभी न क्षीण होने वली तथा देवों का निर्माण करने वाली हो। अदिति का एक अर्थ देने वाली है अर्थात् पत्नी दानशीला हो, आगे कहा सरस्वती - सुशिक्षित व विज्ञानवति तथा परिष्कृत जीवन वाली हो... और एसौ ऐहि- वह सभ्य हो, शास्त्रीय ज्ञानवाली हो तथा सदाचारिणी हो।

यजुर्वेद के एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि पति-पत्नी दोनों ही प्रभुभक्त हों।

भवन्तं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ।
मा यज्ञंहिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः।।

(यजुर्वेद 12/60)

(भवन्तं नः) परमात्मा कहते हैं कि हे पति-पत्नी तुम हमारे बनो और फिर आगे प्रभु का कौन बन सकता है, इन गुणों का संकेत भी किया गया है। (समनसौ) जब दोनों ही समान मन वाले होंगे... (सचेतसौ) एक ही इष्टदेव का ध्यान करने वाले होंगे... दोनों का ज्ञान एक-सा होगा..(अरेपसौ) दोषरहित होकर जब दोनों पतिव्रता व पत्नीव्रती होंगे...(यज्ञं मा हिंसिष्टम्) जो कभी भी यज्ञ की हिंसा नहीं करेंगे अर्थात् यज्ञ को कभी नहीं छोड़ेंगे बल्कि निरन्तर यज्ञादि करते रहेंगे..., (यज्ञपतिम्) यज्ञ के प्रति परमात्मा को हिंसित नहीं करेंगे अर्थात् कभी भी प्रभु की उपासना नहीं छोड़ेंगें...(जातवेदसौ) स्वयं पुरुषार्थ से धन कमाने वाले बनेंगे...धन के मद में आकर कभी भी किसी का अशुभ नहीं करेंगे...फिर प्रभु कहते हैं कि (ऐसे गुण धारण कर लेने पर), (अद्य नः) आज से तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ... फिर वह प्रभु आपको अपने पास बिठाएगा, यदि तुम्हारे पास उपरोक्त गुण होंगे। फिर आगे कहा है-

विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे....ध्रुवा सीद।।

(यजुर्वेद 14/12)

हे पत्नी! तुझे उस (विश्वकर्मा) परमात्मा ने (अन्तरिक्षस्य पृष्ठे सादयतु) (हृदयान्तरिक्ष की श्री में) बिठाया है (बिठाएगा यदि आगे के गुण भी होंगे), (ज्योतिष्मतिम्) तेरा जीवन ज्ञान की ज्योति से जगमगा रहा है या जगमगाए..., (प्राणाय, अपानाय, व्यानाय विश्वस्मै) प्राणशक्ति के लिए, दोषों को दूर करने वाली अपान शक्ति के लिए और सारे शरीर में व्याप्त होकर नाड़ी संस्थान को उत्तम रखने वाले व्यानशक्ति के लिए समर्थ हों...,(विश्वं ज्योति यच्छ) सम्पूर्ण ज्ञान देने वाली बन अर्थात् स्वाध्याय व सत्संग से स्वयं ज्ञान प्राप्त करके अन्यों को भी ज्ञान बांटने वाली बनो...(वायु ते अधिपति) तेरा गुणसम्पन्न पति क्रियाशील हो(उसे उस प्रकार की प्रेरणा व सहयोग आदि देती रह) (तया देवतया अंगिरस्वत् ध्रुवा सीद) उस देवतुल्य पति के साथ अंग-प्रत्यंग में रस वाले व्यक्ति की भांति तू ध्रुव होकर रहने वाली बन... इसी दृष्टिकोण से (यजुर्वेद 14/13) में पत्नी को - '**राज्ञी, विराट्, सम्राट, स्वराड् व अधिपत्नी कहा है।**' इसी वेद में आगे कुछ और गुण इस प्रकार बताए गये हैं -

अधिपत्न्यसि बृहती दिग्विश्वे ते ...यज्ञमानं च सादयन्तु।।

(यजुर्वेद 15/14)

(अधिपत्नी असि) हे स्त्री! तू घर की अधिक्येन पालयित्री है.. ..(बृहती दिक्) यह प्रौढ़ा बृहस्पतिरूप अधिष्ठातावाली- बढ़ी हुई ऊर्ध्वा तेरी दिशा है, तेरे जीवन का लक्ष्य सर्वोच्च स्थिति में पहुंचना है, तूझे ऊर्ध्वा दिशा के अधिपति बनना है, (ते देवा: विश्वे) बारह विश्वदेव ही तेरे देव हैं। इन बारह के बारह मासों के नामों से तुझे 'इस संसार वृक्ष की वशिष्ठ शाखा बनना है, ज्येष्ठ बनना है, कामादि से पराभूत नहीं होना, शुभ उपदेश का श्रवण करना, इसे ही कल्याण का मार्ग समझना, इस पर चलने के लिए कल का प्रोग्राम

आर्यसमाज और डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भारत में कुछ संकीर्ण मानसिकता वाले लोग अक्सर आर्यो को विदेशी कहने पर तुले रहते हैं। परंतु वे कभी डॉ. अंबेडकर को पढ़ते तक नहीं हैं। **डॉ. अंबेडकर** ने माना है कि आर्य कोई विदेशी जाति नहीं,वरन् **आर्य भारत के मूलनिवासी** थे। हम कुछ प्रमाण रखते हैं जिससे सिद्ध होगा कि डॉ. अंबेडकर आर्यो को विदेशी नहीं मानते थे। देखिये, पहला प्रमाण अंबेडकर संपूर्ण वांङ्मय खंड 7 पेज नं 321 के अनुसार :-

''यह सोचना गलत है कि आर्य आक्रमणकारियों ने शूद्रों पर विजय प्राप्त की। पहली बात तो ये है कि इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि आर्य भारत के बाहर से आये और उन्होंने यहां के मूलनिवासियों पर आक्रमण किया था। इस बात की पुष्टि के कई प्रमाण हैं कि आर्य भारत के मूलनिवासी थे।''

फिर आगे पेज नं 322 पर लिखते हैं :-

''शूद्र को आर्य स्वीकार किया था और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी उनको आर्य कहा गया है। शूद्र आर्यो के अभिन्न,जन्मजात और सम्मानित सदस्य थे।''

लीजिये, अब शूद्रों को भी आर्य कह दिया!

दूसरा प्रमाण है **'शूद्र कौन थे'** पेज नंबर 52 पुस्तक से -

''जहां तक आर्य जाति के बाहर से आने और यहां के मूलनिवासियों को जीतने का संबंध है, ऋग्वेद में ऐसा कोई भी प्रसंग नहीं है जो इसकी पुष्टि करता हो। वैदिक साहित्य इस मत के विपरीत है कि आर्य विदेश से आये। ऋग्वेद में आर्य तथा दास और दस्युओं के युद्ध के विषय में कोई विशेष कथा नहीं मिलती।''

एक अंतिम प्रमाण **'शूद्रों की खोज'** पुस्तक से देते हैं ।

१. शूद्र आर्यजाति के सूर्यवंशी थे।

२. भारतीय आर्यो में शूद्र क्षत्रिय वर्ण के थे।

३. शूद्र क्षत्रिय वर्ण के थे इत्यादि ।

परिणामः डॉ. अंबेडकर के अनुसार-

1. आर्य विदेशी नहीं थे न उन्होंने भारत के मूलनिवासियों पर आक्रमण किया।

२. आर्य भारत के मूलनिवासी हैं, उनके भारतीय होने के प्रमाण इतिहास में मिलते हैं।

३. शूद्र आर्य जाति के अभिन्न अंग थे। वे क्षत्रिय वर्ण के ही थे।

पाठकगण! हमने डॉ. अंबेडकर साहब की पुस्तकों से सिद्ध कर दिया के वे न तो आर्यो को विदेशी मानते थे न ही आक्रमणकारी मानते थे। डॉ. अम्बेडकर को अपना मार्गदर्शक बताने वाले अम्बेडकरवादी उनकी इस मान्यता को जानकर नहीं मानते। क्योंकि इससे उनका षड्यंत्र असफल हो जायेगा। ये लोग अपने दादागुरु की पुस्तकें पढ़े बिना उनके विपरीत ही झूठी कल्पना करते रहते हैं। आर्यो को विदेशी कहना डॉ. अंबेडकर की मान्यता का गला घोंटने के समान है। इसलिये ऐसे लोगों को कोई हक नहीं है कि आर्यो को विदेशी बतावें।

संदर्भग्रंथ एवं पुस्तकें

१. अंबेडकर सम्पूर्ण वाङमय खंड- 7

२. शूद्र कौन थे

३. शूद्रों की खोज

(सबके लेखक डॉ. बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर)

पति-पत्नी मिलकर... पृष्ठ 13 का शेष

नहीं बनाना, कामादि को आज ही अभी आत्मावलोकन करके ढूँढ़-ढूँढ; मारना है... इस प्रकार अपनी उच्चता का पोषण करना है, यही तेरा ऐश्वर्य है... इसके आगे सांसारिक ऐश्वर्य तुच्छ है।

ये देव (बारह मास) यही बोध दे रहे हैं और यही तेरे (अधिपतयः) अधिष्ठातृरूपेण रक्षक होंगे। (बृहस्पतिः हेतीनान् प्रतिधर्त्ता) ऊँचे से ऊँचे ज्ञान का पति गृहपति घर पर आने वाली घातक बातों का प्रतिकार करने वाला है, (त्रिणवत्रयस्तिंशौ स्तोमौ) पुष्टि तथा 33 देवों का धारण ही तेरा प्रभु स्तवन हो... वे (त्वा पृथिव्याम् स्तम्भ्नीताम्) इस शरीर में सेवित करने वाले हों... तेरे शरीर को ये पूर्ण स्वस्थ बनाऐं (उक्थे वैश्वदेवाग्निमारुते अव्यथायै स्तभ्नीताम्) प्रशंसनीय विश्वदेव (दिव्यगुण), अग्नि (वैश्वानर अग्नि) तथा मरुत (प्राणापान) ये सब पीड़ा के अभाव के लिए मुझे थामे, (शाक्वररैवते सामनी अन्तरिक्षे प्रतिष्ठित्यै) शक्ति को प्राप्त करने की भावना तथा धन और ज्ञानधन को प्राप्त करने की भावना तेरे साम और उपासन हों, ये तेरे हृदय में प्रतिष्ठित हों... जीवन के सिद्धान्त बन जाएं... कभी अलग न हों, **(देवेषु प्रथमजाः ऋषयः त्वा दिवो मात्रवा वरिम्णा प्रथन्तु)** विद्वानों में प्रथम कोटि के तत्त्वद्रष्टा विद्वान् तुझे ज्ञान के अमुक-अमुक अंश से तथा हृदय की विशालता से विस्तृत जीवन वाला बनाएं (वधर्त्ता च अयं अधिपतिः ते च सर्वे संविदानाः त्वा यजमानं च स्वर्गेलोके सारदन्तु) घर की आपत्तियों से बचाने वाली ज्ञानी गृहपति और ये आधिक्येन रक्षक 'विश्वदेव' और वे सब ज्ञानी एकमत्यवाले होकर तुझे और यज्ञशील गृहपति को दुःखाभाववाले लोक के ऊपर प्रकाशमय लोक में स्थापित करें।

- **महात्मा चैतन्यमुनि**

महादेव, सुन्दरनगर, जिला मंडी (हिमाचल प्रदेश)

महर्षि दयानन्द के चार पदार्थ

वैदिक संस्कृति में मानव के चार प्राप्तव्य पदार्थ हैं - **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।** इन चारों की प्राप्ति करना मानव का सर्वतोमहान् लक्ष्य है। किन्तु अधिकांश मनुष्य एक जन्म में एक पदार्थ की भी सम्प्राप्ति नहीं कर पाते। बहुत थोड़े व्यक्ति एक या दो की प्राप्ति कर पाते हैं। तीन की प्राप्ति करने वाला महापुरुष करोड़ों में एक होता है। एक जीवन में इन चारों की प्राप्ति करने वाला देवपुरुष तो कई शताब्दियों में उत्पन्न होता है। महर्षि दयानन्द ऐसे ही देवपुरुष थे। उन्होंने चारों पदार्थों की प्राप्ति की थी। धर्म उनका गुण था। अर्थ उनका चेहरा रहा। काम उनके अधीन रहा और मोक्ष उनका फल बना।
महर्षि मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं -

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह :।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।
(मनुस्मृति : अध्याय 6, श्लोक 12)

स्वामी दयानन्द सरस्वती धर्म की साक्षात् मूर्ति थे। वे गृह-त्याग के समय दिन भर पेड़ पर बैठे रहे, योगियों की खोज में बर्फीले उत्तराखण्ड में भटकते फिरे। नर्मदा-स्रोत तक बीहड़ जंगलों की खाक छानी। गुरु विरजानन्द की सेवा करते हुए विद्या पूर्ण की। समाज-सुधार में विचल रहकर पाखण्ड-खण्डन एवं धर्म-प्रसार करते रहे। अमृतसर में जब लोगों ने ईट-पत्थर बरसाये तो मुस्कुराकर अनुयायियों से बोले कि आज जो लोग मुझ पर पत्थर बरसा रहे हैं, वे ही कल आप पर पुष्प बरसायेंगे।

क्षमा के क्षेत्र में उन जैसा दूसरा उदाहरण मिलना कठिन होगा। अनूपशहर में पानी में विष देने वाले को, वाराणसी में निरन्तर गाली देने वाले व्यक्ति को, प्रयाग में विषमिश्रित मिष्ठान्न भेंट करने वाले को और अन्त समय में दूध में विष पिलाने वाले पाचक को उन्होंने क्षमा कर दिया। क्षमारूपी धन से इतने समृद्ध व्यक्ति विश्व के इतिहास में कितने हुए हैं?

मनोनिग्रह द्वारा उन्होंने समाधि सिद्ध की। केवल एक कौपीन रखकर अस्तेय (एवं अपरिग्रह) का पालन किया। बाह्य एवं आभ्यन्तर शौच की प्रतिमूर्ति बने हुए तिरस्कृतों का उत्थान, समाज का सुधार एवं संसार का उपकार करते रहे। इन्द्रियनिग्रह करके इन्द्रिय-जय की अवस्था को प्राप्त किया और भयंकर शीत में कौपीन-मात्र धारण कर प्रसन्न घूमते रहे तथा गीता के 'समदु:खसुखं धीरम्' की उक्ति को चरितार्थ करते रहे।

उनकी धी: (बुद्धि) बड़ी प्रखर थी। गुरु विरजानन्द उन्हें कालजिह्व एवं कुलक्कर कहा करते थे। कालजिह्व अर्थात् जैसे काल सब पर बली होता है, उसी प्रकार दयानन्द की वाणी सब पर विजय प्राप्त करती थी। कुलक्कर अर्थात् खूँटा जिस प्रकार अपने स्थान पर अचल रहता है, उसी प्रकार दयानन्द का तर्क अचल रहता था। उन्होंने वेद की विद्या जो लुप्त तो नहीं हुई थी, किन्तु सुप्त अवश्य हो गई थी, उसे सम्पूर्णता में प्राप्त किया और विश्व में वेदों का डंका बजा दिया। सत्य को प्राणों से अधिक प्रेम करने वाले ऋषि दयानन्द ने बरेली में कहा कि चक्रवर्ती राजा अप्रसन्न हो जाए तो भी मैं सत्य ही कहूँगा। जोधपुर जाते समय हुंकार भरी कि लोग मेरी अंगुलियों को बत्ती बनाकर जला दें तो भी मैं सत्य ही कहूँगा। उन्होंने केवल कहा नहीं अपितु सत्य बोलकर अपने प्राण दे भी दिये।

महर्षि दयानन्द ने अक्रोध की भी पूर्ण साधना की। वे शास्त्रार्थ में, सार्वजनिक कल्याण में एवं वेदमन्त्रों की व्याख्या में तेज, ओज एवं मन्यु से कार्य लेते थे, किन्तु व्यक्तिगत हानि, पीड़ा एवं अपमान में सर्वथा सहनशील थे। आचार्य चाणक्य का वचन 'शान्तितुल्यं तपो नास्ति' उन पर सटीक बैठता है। इस प्रकार ऋषि ने धर्म के सभी दस लक्षणों को सर्वात्मना जिया था।

अर्थ लोगों को अपने पाश में जकड़े रहता है किन्तु यह महर्षि दयानन्द को लेशमात्र न पकड़ सका। वे अर्थ के प्रलोभनों से ऊपर उठे रहे और अर्थ जीवन-भर उनका चेहरा बना रहा। जब ओखीमठ के महन्त ने उनसे कहा कि हमारे शिष्य बन जाओ, मंदिर की सम्पूर्ण सम्पत्ति तुम्हारी होगी तो महर्षि ने उत्तर दिया कि मैं इससे अधिक पैतृक सम्पत्ति को ठोकर मारकर आया हूँ। उदयपुर में एकलिंग महादेव मंदिर की आय के प्रलोभन के प्रत्युत्तर में कहा कि जिस राज्य को मैं एक दौड़ में पार कर सकता हूँ उसके लिए उस परमेश्वर का आदेश कैसे छोड़ दूँ जो सारे संसार का राजा है।

दयानन्द एक संन्यासी थे। उन्होंने कभी रोटी के लिए भिक्षा नहीं माँगी। कई-कई दिन तक वे भूखे रहे हैं। मस्तिष्क सोच नहीं पाता कि उन्होंने किस प्रकार स्वयं को जीवित रखा और अपरिमित बल के स्वामी बने रहे। दूसरी ओर भारतवर्ष की दरिद्रता पर वे अत्यधिक दु:खी रहते थे। भारत की अर्थ-व्यवस्था में गाय का महत्त्व बताते हुए उन्होंने '**गोकरुणानिधि**' नामक पुस्तक में समझाया है कि एक गाय जीवन भर में 410440 मनुष्यों का एक बार भोजन से पालन करती है। उन्होंने वेद-भाष्य में अनेक स्थलों पर शिल्प-कला की उन्नति हेतु वेद की साक्षी दी हैं इस प्रकार महर्षि दयानन्द व्यक्तिगत जीवन में अस्तेय एवं परिग्रह के व्रती और राष्ट्रीय स्तर पर समृद्धि के साधक रहे। अर्थ के प्रति इससे उत्तम दृष्टिकोण और क्या हो सकता है!

काम का शीर्ष बिन्दु भोग न होकर वशित्व है। ऋषि दयानन्द ने बचपन से ही भोग को त्यागकर ब्रह्मचर्य का मार्ग चुना था। ब्रह्मचर्य में समस्त तप आ जाते हैं और यह मानसिक रूप से अत्यधिक कठिन है किन्तु इसका फल भी उच्चतम है और इसे चरमावस्था तक साधकर

धर्म की धुरा को खींचने के लिए धन की आवश्यकता नहीं होती।

ऋषि दयानन्द ने उस फल को प्राप्त किया। गीता में कहा गया है -

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्।

(गीता, अध्याय- 18, श्लोक -37)

अर्थात् यह प्रारम्भ में विषतुल्य कठोर किन्तु परिणाम में अमृततुल्य आनन्ददायक है। महर्षि ने भी तदनुरुप तप:पूत होकर अमृतपान किया।

आरम्भ में दयानन्द का लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति था। वे इसी के लिए योगाभ्यास एवं ईश-चिन्तन करते थे।गुरु विरजानन्द द्वारा गुरु-दक्षिणा में धर्म-प्रचार एवं समाज-सुधार को मुख्य कार्यक्रम बना लिया। तथापि उन्होंने मोक्ष-साधना नहीं छोड़ी। वे मोक्ष एवं राष्ट्र की साधना साथ-साथ करते रहे। आचार्य चाणक्य ने कहा है- **'मोक्षम् इच्छन्ति देवा:'।** ऋषि दयानन्द भी तदनुरुप मोक्ष-मार्ग पर चलते रहे।

एक महात्मा ने उनसे पूछा कि आप खण्डन-मण्डन के बखेड़े में क्यों पड़े हैं ? आप तो इसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। इस पर महर्षि दयानन्द ने उत्तर दिया कि वेद-प्रचार में प्राप्त होने वाला आनन्द तुलनातीत है, इससे ऋषि-ऋण उतरता है और मैं भी ब्रह्मानन्द में रहता हूँ, मैं विश्व के दीन-दु:खियों को दीनता से मुक्ति दिला दूँ तो स्वयं भी मुक्त हो जाऊँगा।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष, चारों पदार्थों की प्राप्ति की। हम भी उनका अनुसरण करके अपने लिए धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धिद और संसार में सुख, शान्ति, समृद्धि और आनन्द की वृद्धि करें।

- आचार्य रूपचन्द्र दीपक
6105, पतंजलि योगपीठ फेज-2, हरिद्वार -249405,
मोबाइल - 9839181690

खण्डन-मण्डन

बहुत से लोगों को यह शिकायत रहती है कि आर्यसमाज खण्डन-मण्डन बहुत करता है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो आर्यसमाज की बात सुनने से बचे रहना चाहते हैं, सिर्फ इसलिए कि धर्म सम्बन्धी बातों में उनको क्यों ? क्या ? जानने की रुचि नहीं। आर्यसमाज का निर्माण इसी क्यों? क्या? के जानने का उद्देश्य लेकर हुआ। आर्यसमाज के दस नियमों में आधे से अधिक नियम इस प्रकार के हैं कि जिनके पालन से खण्डन-मण्डन की प्रक्रिया स्वतरू बन जाती है।स्वामी दयानन्द के खण्डन के तरीकों पर बहुत से कथित विद्वानों को भी रोष है। किन्तु वे लोग शान्त चित्त और निष्पक्ष होकर ऋषि के लेख और ग्रन्थ पढ़ें तो उन्हें इस खण्डन के पीछे महर्षि की सहृदयता और अपनेपन का अनुभव हो सकेगा।

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका और अनुभूमिकाओं में उन्होंने कई स्थानों पर लिखा है कि मेरा अभिप्राय किसी का मन दुखाना नहीं है, केवल सत्य-असत्य को दर्शाना है। उन्होंने यह भी लिखा है कि मेरे लिखे पर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान् लोग यथायोग्य अभिप्राय समझेंगे। ऋषि को अपने उपदेशों में जो दुर्व्यवहार मिलता था, उसको सहते हुए भी वे अपने उद्देश्य पर अडिग रहे। बड़े-बड़े मठाधीशों व राजा-महाराजाओं के प्रलोभन उन्हें डिगा न सके। उनके खण्डन से खिन्न होकर हिन्दुओं ने जब उन्हें रहने का स्थान नहीं दिया तो मुस्लिम बन्धु के अतिथि बनकर कृतज्ञतापन के रूप में उन्हीं के दोषों की समीक्षा करने लगे।

महर्षि ने असत्य के विरुद्ध इतना कड़ा रुख क्यों और किस अधिकार से अपनाया, इस पर भी विचार करना आवश्यक है -गुरुवर स्वामी विरजानन्द के आदेश का पालन करना था, जिसके लिये उन्होंने गुरुदक्षिणा के रूप में अपना जीवन अर्पित कर दिया था। ऋषि ने लगभग तीस वर्षो के भारत-भ्रमण में अज्ञान और पाखण्ड का बोलबाला अपनी आँखों से देखा था। लगभग तीन हजार आर्ष और अनार्ष ग्रन्थों के अध्ययन ने उनके ज्ञान भण्डार को अथाह कर दिया था। विश्व के (तत्कालीन) दो अरब मनुष्यों के सामने एक लंगोटधारी संन्यासी अपने पूरे विद्याबल और आत्मबल के साथ सिंह की तरह दहाड़ रहा था। यदि वह दहाड़ न लगाते तो लोग बजाय सुनने के अन्य सन्तों की भाँति एक पृष्ठ नये सन्त का जोड़ देते कि एक स्वामी दयानन्द हो गये हैं, जिन्होंने निराकार परमेश्वर की पूजा पर बल दिया, इससे अधिक कुछ न होता। उदार हिन्दू जाति निरीश्वरवादी बुद्ध को भी अवतार मानकर चुप रह सकती है तो वह जाति आस्तिक दयानन्द की बातें सुनने की तकलीफ क्यों करती ? इन सब परिस्थियों में ऋषि का डंके की चोट खण्डन करना, शास्त्रार्थ के लिए ललकारना और विज्ञापन प्रसारित करना सर्वथा युक्तियुक्त था।

ऋषि का पक्ष सत्य पर आधारित था। उनका कहना था कि जिन लोगों ने वेदों के धर्म को उलटा दिया है अब मैं उन लोगों की उलटी मान्यताओं को उलटाकर सुलटा कर रहा हूं। लोगों की दृष्टि में उनका वह उलटना खण्डन था।आर्यसमाज अपने नियमों और ऋषि के आदर्श को लेकर कार्यक्षेत्र में है, चूंकि आज हम आर्यो में अपनी मान्यताओं के प्रति दृढ़तापूर्वक आचरण नहीं है, अतरू वर्तमान में किया जा रहा खण्डन प्रभावी नहीं हो रहा। आवश्यकता है हम अपने मण्डन पक्ष (विधेयात्मक कार्यक्रम)को ठीक से श्रद्धापूर्वक अपनाकर खण्डन करने के अधिकारी बनें।

साभार : भावेश मेरजा

एक ऐतिहासिक घटना

कृष्णा मेनन अपने लन्दन प्रवास के दिनों में एक दिन अपनी मित्र मंडली में बैठे हुऐ थे कि अचानक एक दोस्त ने उन्हों संबोधित करते हुए कहा-

''यह सामने बैठा हुआ तुम्हारा मित्र 'यहूदी' है। इसका कहना है कि इसके पास ईश्वर का एक ग्रन्थ है जिस का नाम 'तौरेत' है और यह ईश्वरीय ज्ञान का ग्रंथ है मूसा अलै. के माध्यम से दिया गया था।''

''मैं यह बात जानता हूं! कृष्णा मेनन ने जवाब दिया। अब उसी मित्र ने एक दूसरे ईसाई मित्र की ओर संकेत करते हुए कहा-

''यह व्यक्ति 'ईसाई' है और इसका कहना है कि इसके पास भी ईश्वर की एक किताब है जिसका नाम 'इन्जील' है और यह दिव्य ज्ञान की भेंट ईश्वर ने महात्मा ईसा मसीह के द्वारा प्रदान की थी।''

''मैं यह भी जानता हूं! कृष्णा मेनन ने हल्की सी मुस्कुराहट के साथ कहा- मानो इन विश्व्यापी तथ्यों को दोहराने पर उन्हें आश्चर्य हो रहा हो लेकिन बोलने वाला पूरी गम्भीरता से बोल रहा था। उसने तीसरा विषय छेडते हुए एक मुसलमान दोस्त की ओर इशारा करते हुए कहा- ''यह हमारा मुसलमान दोस्त है और इसका कहना है कि इस के पास भी ईश्वर का एक ग्रन्थ है- 'कुरआन', और ईश्वर ने यह ज्ञान जिस सत्पुरूष के माध्यम से दिया, उस का नाम ह. मुहम्मद सल्ल. है।''

''अरे भाई, मैं यह भी जानता हूँ'' कृष्णा मेनन ने आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया।

''निस्सन्देह! वही मित्र बोला''- हम और तुम यह बातें खूब जानते हैं, लेकिन मित्र! हममें से कोई यह नहीं जानता कि 'वेद' जिसे तुम ईश्वर का सबसे पहला, सबसे प्राचीन, सबसे श्रेष्ठ ज्ञान और वाणी मानते हो, उसे आदि-ग्रन्थ कहते हो उसको ईश्वर से ग्रहण करने तथा जनसाधारण तक पहुंचाने वाला सर्वप्रथम मानव-माध्यम आखिर कौन था?

कहा जाता है कि पूरी सभा की ओर से इस बार प्रश्नवाचक मुस्कुराहट और आश्चर्य के सामने पहली बार कृष्णा मेनन सिर से पांव तक प्रश्न चिह्न बन गए। एक ऐसे चिन्तन के सन्नाटे में गुम हो गए जिसे पहली बार उन्हें यह एक ठोस सवाल महसूस हुआ हो। मानो पहली बार उन्हें अपने वैदिक विद्वानों के वर्तमान शास्त्रीय दृष्टिकोण में एक वास्तविक अन्तराल की अनुभूति हुई हो।

तोरैत, इन्जील और कुरआन के ईश्वर से मानव तक पहुचने के माध्यम तो मालूम हैं, लेकिन यदि वेद देववाणी है तो इसे लाने वाला ईशदूत कौन था?

अब इस जटिल प्रश्न का उत्तर भी एक एतिहासिक घटना से जानें। गुरुकुल काँगड़ी के पूर्व उपकुलपति स्व. डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार जब स्नातक बन कर गुरुकुल से निकले थे तो लुधियाना में एक दिन उन्होंने देखा कि बाजार में एक मौलवी मंच पर खड़ा होकर ध्वनि विस्तारक यन्त्र के आगे बोल रहा था-आर्य समाजी कहते हैं कि खुदा निराकार है तथा वेद का ज्ञान खुदा ने दिया था।मैं पूछता हूँ कि जब निराकार है तो बिना मुँह खुदा ने वेद ज्ञान कैसे दिया? तभी डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार मौलवी के निकट जा पहुंचे और पूछा अच्छा बताइये आपने यह लाउडस्पीकर किसलिए लगा रखा है?''

मौलवी-अपनी बात दूर खड़े लोगों तक पहुँचाने के लिए ।

प्रश्न-यदि दूर खड़े व्यक्ति आपके निकट आ जाएँ तो क्या फिर भी आप इसका प्रयोग करेंगे?'

मौलवी-नहीं, तब इसकी जरूरत ही नहीं पड़ेगी। तब मैं पास खड़े आदमी से ऊँची आवाज में नहीं बोलूँगा ।

प्रश्न-मान लीजिए यदि आपकी बात सुनने वाला व्यक्ति आपके अन्दर ही स्थित हो जाए, तब भी क्या आपको उससे बात करने के लिए मुँह की आवश्यकता पड़ेगी?''

मौलवी-नहीं, तब मुझे मुँह की जरूरत नहीं रहेगी।

सत्यव्रत सिद्धांतालंकार-बस, यही उत्तर है, आपके प्रश्न का। ईश्वर सबमें है तथा सबमें ईश्वर है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक तथा सर्वान्तर्यामी है। उसके साथ बात करने के लिए मनुष्य को मुख की आवश्यकता नहीं पड़ती तथा न ही ईश्वर को हमसे बात करने के लिए मुख की अपेक्षा है। वेद का ज्ञान ईश्वर ने चार ऋषियों को उनके मन में बिना मुख दिया था।'' **मौलवी साहब** निरुत्तर हो कर चुप हो गए।

एक नहीं ऐसे सैकड़ों उदाहरण है जब आर्यसमाज के विद्वानों ने अंधविश्वास और पाखण्ड के गढ़ को ढहाते हुए लोगों के सामने उस परम पिता परमेश्वर का सच्चा स्वरूप प्रस्तुत किया। आप भी ऐसे पाखण्ड और अंधविश्वास से दूर रहें।

क्षमा, संतोष, सरलता और विनम्रता : ये चार धर्म के द्वार हैं।

औषधीय गुणों की खान : हल्दी

यूँ तो प्राय: सभी कंद मनुष्य के लिए किसी न किसी प्रकार से उपयोगी हैं लेकिन **'कन्द हल्दी'** का अपना एक विशिष्ठ स्थान है। हल्दी आपको राष्ट्रपति की किचन से लेकर मजदूर की झोंपड़ी में भी मिल जाएगी। प्रकृतिक ने जहाँ इतने बड़े-बड़े रोग पैदा किये हैं, वहीं उनको शान्त करने के साधन भी साथ ही पैदा कर दिये हैं। प्राचीन ग्रन्थों को पढ़ने से पता चलता है कि यदि भोजन के साथ हल्दी का प्रयोग न किया जाए तो हर मनुष्य प्रमेह रोग का शिकार हो सकता है, इसलिए हल्दी का प्रयोग अत्यावश्यक है। हल्दी के जितने चिकित्सा प्रयोग हैं उन्हें लिखने में एक पुस्तक बन सकती है। यहाँ संक्षेप में पाठकों के लिए कुछ प्रयोग दिये जा रहे हैं यथा -

1. दाद होने पर :- हल्दी की गांठ को पानी से घिसकर दाद पर लेप कर दीजिए। सूख जाने पर दोबारा लेप कर लें। गाँवों में आज भी सदियों पुराना नुस्खा काम में लाया जाता है जो पूर्णत: सफल भी है।

2. जुकाम में सिरदर्द होने पर:- पिसी हुई हल्दी की एक चुटकी भरकर आग पर डालें और उसके धुएं को नाक से खींचे अथवा इसकी धूनी लें। ऐसा करने से आपको काफी संख्या में छींके आएंगी जिससे आपके शरीर में जमा कफ बाहर निकल जाएगा और आपको जुकाम व सिरदर्द से राहत मिलेगी।

3. ठण्ड लगकर बुखार होने पर:- दूध में हल्दी व काली मिर्च मिलाकर पीने से बुखाकर ठीक हो जाएगा।

4. हिचकी आने पर:- चुटकी भर हल्दी को जीभ पर रखने से हिचकियाँ बन्द हो जाती है।

5. माइग्रेन अथवा आधे सिर का दर्द:- नौसादर और हल्दी को मिलाकर एक कप पानी में उबालकर भाप सूंघने से माइग्रेन के दर्द में आराम मिलता है।

6. पाण्डु (कामला) होने पर:- हल्दी की एक चुटकी दही में मिलाकर खाएं। यह औषधि दिन में 3 बार अवश्य लें।

7. खाँसी के लिए:- कफ की खाँसी के लिए हल्दी की गांठों को सरसों के तेल में थोड़ा भूनकर चूर्ण बना लें और शहद के साथ प्रयोग करें। इससे आपके शरीर का कफ धीरे-धीरे बाहर निकल जाएगा और खाँसी शान्त होगी।

8. मूत्र बार-बार आने पर:- जब मूत्र अधिक और बार-बार आता हो तो हल्दी और तिल का चूर्ण बनाकर गुड़ में मिलाकर खाने से लाभ होता है।

9. दमा होने पर:- हल्दी और काली मिर्च बराबर मात्रा में लेकर बारीक पीस लें। इस मिश्रण की 6 ग्राम की मात्रा गुड़ में मिलाकर खाने से जमी हुई बलगम बाहर हो जाती है और दमे में लाभ होता है।

10. रक्त विकार में:- यदि खून में खराबी हो तो हल्दी का दो ग्राम चूर्ण गाय के दूध में प्रयोग करना चाहिए।

11. मुँह में छाले होने पर:- दारू नामक हल्दी के काढ़े से कुल्ले करने से मुँह के छाले शीघ्रता से ठीक हो जाते हैं।

12. गले में खराश होने पर:- गर्म दूध में चुटकी भर हल्दी डालकर रात को पीने से गले की खराश ठीक हो जाती है।

13. पेट के समस्त रोगो के लिए:- एक चम्मच कच्ची हल्दी का रस और एक चम्मच शहद प्रतिदिन प्रात: प्रयोग करें। पेट के समस्त रोगों के लिए यह रामबाण औषधि है।

14. यकृत (लीवर, जिगर) के कैंसर में:- एक छोटा चम्मच पिसी हुई हल्दी छाछ में मिलाकर एक मास तक पीने से यकृत पूरी तरह से ठीक हो जाता है।

15. मधुमेह के कारकों को नियंत्रित करने में:- शुगर अथवा मधुमेह को नियंत्रित रखने के लिए एक चम्मच पिसी हुई हल्दी प्रात: गुनगुने पानी के साथ प्रयोग करें।

16. सशक्त शरीर अथवा कायाकल्प हेतु:- शरीर को सशक्त बनाने में भी हल्दी बहुत महत्त्वपूर्ण है। हल्दी की एक किलो गाँठे, एक किलो अनबुझा चूना और ढाई किलो पानी लें। एक मिट्टी की मटकी में पहले आधा चूना बिछा दें फिर उस चूने पर हल्दी की गाँठे बिछाएं। अब जो आधा चूना बचा है, उस चूने से हल्दी की गाँठे ढक दें और ऊपर से पानी छोड़ दें। पानी गिरते ही चूना पकने लगेगा। चूना पकने के लगभग डेढ़ घण्टे बाद मटकी के मुँह पर सूती कपड़ा बांध दें और मटकी पर चॉक से दिनांक अंकित कर दें। पूरे दो मास के बाद मटकी से हल्दी की गाँठे निकालकर साफ करें और सूखने के लिए धूप में डाल दें। इस बीच मटकी का मुँह खोलकर देख लें अगर चूना सूख गया हो तो उसमें थोड़ा पानी और डाल दें जिससे नमी बनी रहे। मटकी से निकाली हुई हल्दी की गाँठे सूखने के पश्चात् कूट-कूटकर किसी कांच की बोतल या बरनी में छलनी से छानकर भर लें। आपके लिए **'शक्ति की दवा'** तैयार है। इस औषधि की 3 ग्राम मात्रा को 10 ग्राम शहद के साथ चार माह तक प्रात:काल लेने से आपके शरीर में नवजीवन और शक्ति का संचार होगा। आपका मुख-मण्डल चमकने लगेगा, रक्त शुद्ध होगा और यदि कम आयु में बाल सफेद हो रहे हैं तो वह फिर से काले होने लगेंगे। यह हानि रहित अनुभूत प्रयोग है और इसके लिए किसी प्रकार के परहेज की आवश्यकता नहीं है। साभार : डॉ. मनोहरलाल

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

*प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु **'गुरुकुल-दर्शन'** द्वारा **'गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ '** नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।*

प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'
डॉ. पतंगे हॉस्पीटल, पतंगे रोड
मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद
महाराष्ट्र-413606

गतांक से आगे...दसवीं की बोर्ड की परीक्षा में गणित विषय में अनुत्तीर्ण होने के कारण मुझे पुन: परीक्षा का एक अवसर दिया गया, किन्तु कुरुक्षेत्र के मेरे गणित अध्यापक जी पुन: परीक्षा के परीक्षक को जानते थे। हरिद्वार आने पर उन्होंने परीक्षक जी से कहा- **'इसे पास कर दीजिए, अन्यथा यह जीवन भर पास नहीं हो सकेगा।'** मेरी श्रीमती जी प्राय: हंसी-हंसी में कहा करती है-**'भगवान् भला करे उन दोनों का, वरना तो हमारे श्रीमान् जी आज भी दसवीं में ही अटके रहते!!'**

गुरुकुल में रहने के अंतिम दो वर्षों में हमने वे करुण दृश्य देखें जिन्हें देखकर दिल पसीज उठता था। साथ ही उस संघर्ष, संकटो के बीच मनुष्य की जीवन के प्रति जो आस्था देखी, उसे देखकर हमारा बालक मन भी उत्साह से भर जाता था। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ किन्तु विभाजन के कारण पाकिस्तान नामक एक नये राष्ट्र का जन्म हुआ। 1946- 47 में तत्कालीन पंजाब-सिंध में दंगे होने लगे और लाखों हिन्दू प्राण बचाने के लिए अपनी भू-सम्पत्ति, व्यापार आदि सब छोड़कर वहाँ से भागने को विवश हो गये। हम समाचार सुना करते थे कि पंजाब से सड़क के रास्ते जाने वाली हिन्दुओं की पूरी टोलियाँ पाकिस्तानी प्रदेश में मारी जा रही हैं। यह भी सुना कि कई बार हिन्दुओं से भरी पूरी रेलगाड़ी ही रोककर काट डाली गई। बाद में फौज की सुरक्षा में हिन्दू यात्रियों की गाडियां भारतीय प्रदेश में लायी जाने लगीं।

हमने कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन पर जाकर ऐसी कई रेलगाडियाँ देखी थीं। डिब्बों के भीतर तो खचाखच भीड़ थी ही, इंजन, दो डिब्बों के बीच वाले भाग कफलिंग और शॉक आब्जर्वर पर भी लोग चारपाई लटकाकर या कपड़े का झूला बनाकर सफर करते थे। यही नहीं, डिब्बे के नीचे वाली लम्बी सलाखों पर भी आदमी लदे हुए थे। इतने कष्टों के बीच भी जान बचाकर निकलने में सफल हुए, ऐसा आनन्द वे बतलाया करते थे।

भारत सरकार ने बड़ी संख्या में आ रहे इन शरणार्थियों के लिए स्थान-स्थान पर अस्थायी शिविर लगवाये थे। ऐसा ही एक शिविर हमारे गुरुकुल के पास नीलोखेड़ी में भी लगाया गया था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री उस शिविर के निरीक्षण के लिए आये थे। हमने वहाँ उनका भाषण सुना और सैकड़ो स्त्री-पुरुषों व बच्चों की करुण कथाएँ भी सुनी।

यहाँ इसी प्रसंग का एक दूसरा पहलू भी हमने देखा-सुना था जिसे सुनकर आज भी मेरा सीना गर्व से फूल जाता है। नीलोखेड़ी के शरणार्थी शिविर में डंडे और तम्बुओं के बीच कुछ दिनों तक सरकारी भोजन आदि की व्यवस्था स्वीकारने के बाद उन स्वाभिमानी, परिश्रमी, धुन के पक्के पंजाबी शरणार्थियों ने मांग उठायी कि **'हमें इस तरह भिखारियों की तरह मुफ्त में रोटी मत खिलाओ। हमें कुछ काम दो, हम मेहनत की रोटी खायेंगे।'** उनकी मांगों से पंजाबी समुदाय की श्रम-निष्ठा और समाज का स्वाभिमान प्रकट होता है। धीरे-धीरे सभी पंजाबी-सिंधी लोग शिविर छोड़कर चले गये। दिल्ली, मुम्बई, चैन्नई, कोलकाता आदि महानगरों में ये मेहनती लोग जा बसे। आज भारत के छोटे-बड़े नगरों में इन्होंने व्यापार आदि द्वारा अपनी एक अलग पहचान बना ली है। पंजाबी समुदाय ने विभिन्न नगरों में अपनी अलग पहचान ही नहीं बनाई बल्कि अपनी लगन और मेहनत के बल पर ये सभी जगहों पर अग्रणी बनने में सफल रहे हैं।

मैंने कुरुक्षेत्र में सन् 1948 तक और बाद में हरिद्वार में बरसों तक देखा है कि एक भी पंजाबी भाई, बहन या बच्चे ने कभी भीख नहीं मांगी। किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। छोटे-छोटे बच्चे या बूढ़े भी हरिद्वार के हिमालयीन वनों में जाकर फल-फूल ले आते और बेचते थे परन्तु किसी के आगे हाथ फैलाना उन्हें मंजूर नहीं था। उनकी श्रम-निष्ठा एवं स्वाभिमान वास्तव में उस समाज की अनमोल पूंजी है।

अन्ततः गुरुकुल से विदा होने का दु:खदायी अवसर आ ही गया। सन् 1948 में हमें कुरुक्षेत्र के दस वर्षो का विविध अनुभवों से भरा स्मृति-कोष लेकर महाविद्यालयी अध्ययन के लिए हरिद्वार स्थित गुरुकुल कांगड़ी जाना पड़ा। **...क्रमशः**

वास्तविक जीवन की खोज

आचार्य सत्यप्रकाश जी
आचार्य, आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गतांक से आगे ... युवक तो यह देखकर घबरा गया। उसने कहा- नहीं ! मेरी उम्र कम है, अभी मेरी बुद्धि परिपक्व नहीं है, अनुभव मेरा कोई भी नहीं इसलिए कृपा करें, एक मौका और दें। आप बगिया में एक चक्कर और लगा आवें। जब वह राजा बगिया का एक चक्कर और लगाने चला गया, तभी वह युवक वहाँ से भाग गया और पहरेदारों से कहता गया कि राजा को कहना कि मुझ क्षमा करें क्योंकि राजा जिस चीज को छोड़कर प्रसन्न हो रहा है मैं अन्धा होऊंगा जो उसी चीज को स्वीकार करके प्रसन्न हो जाऊं।

इसको मैं आँख खोलकर देखना कहता हूँ। यह छोटी-सी कहानी यदि आपकी समझ में आ जाये तो आपको पता चल जाएगा कि आंख खोलकर देखना किसे कहते हैं। उस युवक ने कहा कि मैं अन्ध होऊंगा कि राजा जिस चीज को छोड़कर प्रसन्न हो रहा है, उसे लेकर मैं प्रसन्न हो जाऊं ? राजा ने तीस-चालीस वर्ष के अनुभव के बाद जिस चीज को व्यर्थ जाना है और जिससे उसे कोई शान्ति और कोई आनन्द उपलब्ध नहीं हुआ, जिसे छोड़ने के ख्याल से ही वह प्रफुल्लित हो गया, तो मैं भी अपने तीस-चालीस साल को व्यर्थ करने को राजी नहीं हो सकता। राजा का अनुभव अब मेरा अनुभव हो गया है।

जो लोग आँख खोलकर देखते हैं, उन्हें सारे जगत् का अनुभव खुद का अनुभव प्रतीत होता है। यदि आप आँख खोलकर देखें तो आपके मन में जो-जो आकांक्षायें प्रबल हो रही होंगी, उन्हीं आकांक्षाओं को जिन लोगों ने तृप्त कर लिया है, क्या वे शान्त हैं ? क्या वे लोग सुखी हैं ? यदि आप सोचते हैं कि मैं देश का प्रधानमंत्री बन जाऊं तो आपको देखना चाहिए कि जो देश के प्रधानमंत्री हैं क्या वे सुखी हैं, आनन्दित हैं ? यदि आप सोचते हैं कि एक बहुत बड़ा महल हमारे पास हो तो आँख खोलकर देखना चाहिए कि महलों में जो लोग रह रहे हैं क्या वे सुखी हैं, आनन्दित हैं ?

यदि आप सोचते हैं कि हमारे पास बहुत सारा धन हो तो आपको विचार करना चाहिए कि जिनके पास धन है उनके जीवन में कुछ है क्या ? यदि नहीं है तो आपको अपनी आकांक्षाओं की व्यर्थता का दर्शन होगा। आपको ख्याल आएगा कि मेरी आकांक्षाएं भ्रान्त हैं और मुझे उन्हीं गड्ढों में गिरा देंगी जिन गड्ढों में दूसरे लोग गिरे हैं। तो क्या मैं उनके ही जीवन की भांति अपने जीवन को व्यर्थ करूं या कोई नई दिशा खोजूं, कोई नया रास्ता बनाऊं। क्या मैं जीवन के पिटे-पिटाये रास्ते पर चलूं या नई पगडंडी बनाऊं। क्या मेरे से पीछे के लोग और आसपास के लोग जीवन में जिन कष्टों और चिन्ताओं में उलझे हैं उन्हीं में मुझे उलझना है या कि मैं कोई नये जीवन को पाने की चेष्टा में संलग्न हो जाऊं। चिन्तन, सोच-विचार तो पहली बात है। मन के भीतर जीवन के प्रति ठीक-ठीक दृष्टि का पैदा होना पहली बात है पर बहुत कम लोग आँख खोलकर चलते हैं। आपको अपने पड़ोस में, आपके अपने मित्र के पास जैसे वस्त्र दिखाई पड़ते हैं, आप सोचते हैं कि ऐसे ही वस्त्र मेरे पास हों, लेकिन आप यह भी देखें कि उन वस्त्रों के होने से कौन-सी खुशी, कौन-सा आनन्द आपके मित्र को उपलब्ध हो गया है ? हो सकता है आपका मित्र किसी अन्य के वस्त्र को देखकर उन वस्त्रों के लिए लालायित हो रहा हो। हर व्यक्ति दूसरे के पास क्या है इसे देखकर प्रभावित हो रहा है और सोच रहा है कि वैसा ही मेरे पास हो।

आपको दुनिया में एक भी आदमी ऐसा नहीं मिलेगा जो जहाँ है वहीं सन्तुष्ट हो और आनन्दित हो। तब तो स्पष्ट हो जाएगा कि यह दौड़ अन्तहीन है और इस दौड़ में कोई भी सुख को नहीं पाता है। हाँ, दु:ख बदलते जाते हैं।

कभी आपने किसी मरे हुए व्यक्ति को मरघट जाते देखा होगा। रास्ते में उसकी अर्थी को कंधे पर रखे हुए लोग कंधे बदलते रहते हैं। एक कंधे से अर्थी दूसरे कंधे पर रख लेते हैं तो थोड़ी देर को राहत मिलती है। दूसरा कंधा नया होता है इस कारण थोड़ी दूर तक नहीं दु:खता। फिर थोड़ी देर बाद दु:खने लगता है। ऐसे ही जिन्दगी में लोग दु:खों को बदलते हैं। एक दु:ख को हटाते हैं और दूसरे दु:ख को रख लेते हैं। परिवर्तन के कारण थोड़ी देर राहत महसूस होती है फिर दु:ख कायम हो जाता है।

जीवन बहुत छोटा है। यदि हम दूसरों के अनुभवों से फायदा उठाना चाहते हैं तो हमें अपने आसपास समाज में देखना चाहिए। खोज करनी चाहिए कि कहीं मैं भी उन्हीं इच्छाओं से प्रेरित होकर अपने जीवन को खो तो नहीं रहा। यदि आपको यह दिखाई पड़ने लगे तो आपके सामने बहुत-सी बातें स्पष्ट हो जायेंगी। बड़े पदों पर होने से कोई शान्ति नहीं होती है। बहुत धन के होने से कोई शान्ति नहीं होती है। बहुत अच्छे भवनों के होने से शान्ति नहीं होती है। शान्ति होती है भीतर, मनुष्य के हृदय में प्रेम के जन्म से, मनुष्य के भीतर प्रकाश के अनुभव में। मनुष्य के भीतर शरीर के ऊपर किसी नाशरहित तत्त्व के दर्शन में शान्ति अनुभव होती है।

सिकन्दर का नाम आपने सुना होगा। सिकन्दर भारत जीतने आया तो रास्ते में एक फकीर डायोजनीज से उसकी मुलाकात हुई। डायोजनीज बड़ा अजीब फकीर था। वह नाममात्र ही वस्त्र पहनता था और एक छोटे से टीन के पोंगरे में निवास करता था। **(क्रमश:)**

जो धर्म मानव की अनर्थों से रक्षा नहीं कर सकता, वह धर्म निरर्थक है।

भूमि को जहरमुक्त बनाना मुख्य उद्देश्य : आचार्य देवव्रत

शाहाबाद, 3 दिसम्बर 2017 : हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि भूमि को जहरमुक्त बनाना और युवाओं को संस्कारित शिक्षा देकर उन्हें अच्छा नागरिक बनाना ही उनका मुख्य उद्देश्य है। वे आज शाहाबाद की अनाज मंडी में **'आर्यवीर युवा एवं कृषक जागृति सम्मेलन'** को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा. रामपाल आर्य, मंत्री उम्मेद सिंह, गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह यशपाल वधवा, अनिल कक्कड़, सुभाष आर्य, संजीव आर्य, नन्दकिशोर आर्य सहित भारी संख्या में प्रगतिशील किसान उपस्थित थे।

आचार्य देवव्रत ने कहा कि शाहाबाद से उनका पुराना रिश्ता है और वे कभी शाहाबाद के लोगों को नहीं भुला सकते। उन्होंने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र वेद प्रचार विभाग के माध्यम से जहाँ युवाओं को संस्कार एवं स्वास्थ्य के प्रति उन्हें प्रेरित कर रहा है वहीं अब बंजर होती भूमि और लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि मॉडल को जन-जन तक पहुंचा रहा है। उन्होंने बताया कि इस मॉडल से किसान न केवल आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा बल्कि भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ने के साथ-साथ देशी गाय का पालन भी होगा। उन्होंने किसानों को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राकृतिक कृषि फार्म का उदाहरण देकर कहा कि गुरुकुल के फार्म पर जाकर 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' का वास्तविक स्वरूप अपनी आंखों से देखकर जहरयुक्त और कीटनाशक खाद वाली खेती को छोड़कर प्राकृतिक कृशि को अपनाएं।

सम्मेलन को आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मा. रामपाल आर्य ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में स्कूल बच्चों द्वारा सर्वाग सुन्दर व्यायाम, डम्बल, लेजियम, स्तूप-निर्माण तथा लकड़ी मल्लखम्भ का भव्य प्रदर्शन किया गया जिसे देखकर पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस अवसर पर गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने मा. रामपाल आर्य, मंत्री उम्मेद सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी नमिता कौशिक को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया।

गुरुकुल के युवराज को मिला 'बेस्ट जूनियर अवार्ड'

कुरुक्षेत्र, 23 दिसम्बर 2017 : जिला रेडक्रास सोसायटी द्वारा जूनियर रेडक्रास ट्रेनिंग कैम्प का आयोजन 18 से 22 दिसम्बर 2017 तक किया गया जिसमें कुरुक्षेत्र जिला के 20 विद्यालयों के लगभग 100 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस कैम्प में गुरुकुल के छात्र युवराज आर्य को 'बेस्ट जूनियर अवार्ड' से सम्मानित किया गया। गुरुकुल के रेडक्रास परामर्शदाता राजेन्द्र सिंह डीपीई ने बताया कि इस कैम्प में गुरुकुल के 5 छात्रों ने भाग लिया। शिविर में रेडक्रास प्रशिक्षण अधिकारी राजेन्द्र सैनी की देखरेख में जल-संरक्षण, पर्यावरण, प्राथमिक सहायता, व्यक्तित्व विकास, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, हृदय फेफड़े पुनर्सचालन आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। शिविर में युवराज आर्य को 'बेस्ट जूनियर अवार्ड' मिलने पर गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने युवराज सहित समस्त गुरुकुल परिवार को बधाई दी है। गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह गुरुकुल पहुंचने पर युवराज सहित सभी छात्रों व राजेन्द्र सिंह डीपीई को मिष्ठान्न खिलाकर शुभकामनाएं दी तथा छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रधान कुलवन्त सैनी ने कहा कि शिक्षा के साथ गुरुकुल के छात्र विभिन्न क्षेत्रों में नित नये आयाम स्थापित कर रहे हैं जिसका श्रेय गुरुकुल की प्रबंधक कमेटी, गुरुकुल के परिश्रमी और अनुभवी शिक्षकों के कुशल मार्गदर्शन और छात्रों की मेहनत को जाता है।

गुरुकुल के ६ निशानेबाज इंडियन टीम के सेलेक्शन ट्रायल हेतु चुने गये

कुरुक्षेत्र, 27 दिसम्बर 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के निशानेबाजों ने एक बार फिर अपनी अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए इंडियन टीम के सैलेक्शन ट्रायल में जगह बनाई है। गुरुकुल के 6 निशानेबाजों को इस ट्रायल हेतु चुना गया है जिससे पूरे गुरुकुल परिवार में खुशी की लहर है। **गुरुकुल के शूटिंग कोच बलबीर सिंह** ने बताया कि 61वीं नेशनल शूटिंग चैम्पियनशिप 11 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2017 तक केरल में चल रही है। गुरुकुल के छह निशानेबाज तरूण, परमजीत, मुकुल, रितेश, जतिन, आशीश तथा चिराग ने बेहतरीन निशानेबाजी का प्रदर्शन करते हुए निर्णायक मंडल के सदस्यों को बड़ा प्रभावित किया और निर्धारित अंक प्राप्त कर सैलेक्शन ट्रायल इंडियन टीम हेतु चुने गये। **गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी,** निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरूण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने इस उपलब्धि पर सभी निशानेबाजों व शूटिंग कोच बलबीर सिंह को मिठाई खिलाकर बधाई व आशीर्वाद दिया। साथ ही गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के **महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी** ने भी इस उपलब्धि पर समस्त गुरुकुल परिवार को दूरभाष पर शुभकामनाएं प्रेषित की है। **प्रधान कुलवन्त सैनी** ने कहा कि गुरुकुल के निशानेबाज ट्रायल में अच्छा प्रदर्शन जारी रखते हुए इंडियन टीम का हिस्सा बनेंगे तथा देश-दुनिया में भारत के साथ गुरुकुल कुरुक्षेत्र व अपने माता-पिता का नाम रोशन करेंगे।

शून्य लागत प्राकृतिक खेती के सूत्र

पेड़-पौधों व फसलों को उनकी वृद्धि एवं सर्वोत्तम उपज मिलने के लिए जिन-जिन पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, उन सारे पोषक तत्वों की जड़ों को उपलब्ध कराने की महत्तवपूर्ण भूमिका प्रकृति ने भूमि में मौजूद अनन्त करोड़ सूक्ष्म जीवाणु एवं देशी केंचुओं को दी है। रासायनिक एवं जैविक कृषि के माध्यम से ये जीवाणु और केंचुए नष्ट हो गये हैं। इन दोनों की भूमि में पुनरूर्स्थापना करने के लिए जीवाणुओं का जामन/जोरण **(Culture For Fermentation)** के लिए देशी गाय का गोबर सबसे अधिक लाभकारी एवं एकमात्र विकल्प सिद्ध हुआ है। लगातार अनुसंधान से यह ज्ञात हुआ कि एक एकड़ भूमि में केवल 10 किलोग्राम गोबर केवल एक महिने में डालने से इन जीवाणुओं व केंचुओं की पुनर्स्थापना की जा सकती है। इस गोबर को खाद के रूप में न डालकर, जामण या जोरण के रूप में डालना सबसे अच्छा है।

शोधों से यह ज्ञात हुआ है कि बीजामृत और जीवामृत के साथ उपचार ने फसलों की सफल खेती के लिए बेहद उत्साहजनक परिणाम दिए हैं। जीवामृत मिट्टी में विशाल जैविक गतिविधि को बढ़ावा देता है और फसल के लिए पोषक तत्वों को उपलब्ध कराता है। जीवामृत को फसल के लिए पोषक तत्व के रूप में नहीं माना जाता है बल्कि मिट्टी में जैविक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए केवल एक उत्प्रेरक एजेंट है। जीवामृत पर खेती में किये गये परिक्षण यह बताते हैं कि इसको दो हफ्ते में एक बार या कम-से-कम महिने में एक बार उपयोग करना बेहतर है। शोधों में यह पाया गया कि ह्यूमस बनाने के लिए आच्छादन का प्रयोग इसके गुणों को बढ़ा देता है। जीवामृत को उर्वरक और भारी कार्बनिक खाद के विकल्प के रूप में उपयोग किया जा सकता है। घर पर तैयार किये गये जैव-पदार्थ प्रभावी व सस्ते होते हैं।

प्रति दिन औसत गोबर व मूत्र उत्पादन

	गोबर	मूत्र
देशी गाय	10 किलोग्राम	6 लीटर
बैल	13 किलोग्राम	8 लीटर
भैंस	15 किलोग्राम	9 लीटर

एक देशी गाय एक दिन में औसतन 10 किलोग्राम गोबर देती है और एक देशी गाय का 10 किलोग्राम गोबर एक एकड़ में महीने में एक दिन डालना है, अत: एक देशी गाय का गोबर 30 एकड़ कृषि भूमि के लिए पर्याप्त है। यह वैज्ञानिक तौर पाया गया कि 10 किलोग्राम देशी गाय के गोबर में 30-40 लाख करोड़ लाभदायक सूक्ष्म जीवाणु होते हैं, लेकिन यह भी पाया कि इतनी संख्या से अच्छे परिणाम नहीं मिलते हैं। वांछनीय परिणाम लेने के लिए जीवाणुओं की संख्या किण्वन क्रिया **(Fermentation process)** से बढ़ा कर ही लिए जा सकते हैं। शर्करायुक्त पदार्थ (मीठे पदार्थ) किण्वन क्रिया की गति को बढ़ाते हैं। अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ कि 10 किलोग्राम गोबर के साथ 1 किलोग्राम मीठे फलों का गुदा **(Fruit Pulp)** अथवा 10 किलाग्राम गन्ने के छोटे टुकड़े अथवा 4 किलोग्राम गन्ने का रस पर्याप्त होता है। अतिरिक्त ऊर्जा आपूर्ति हेतू प्रोटीन देने वाले दलीय पौधों के घटक (जैसे बेसन, चना आदि) मिलाने से और भी अच्छे परिणाम मिलते हैं। इस सभी सामग्रियों को मिलाने व किण्वन क्रिया से जीवामृत बनाया जाता है।

जीवामृत कैसे बनाएं :- जीवामृत बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली आवश्यक सामग्रीयाँ आपके खेत में ही उगायी जाती हैं या आपके खेत से ही तैयार की जाती हैं इसलिए इनका मूल्य न के ही बराबर है। यदि इन सामग्रियों को बाजार से भी खरीदा जाता है तो बहुत कम दाम पर मिल जाती हैं व सभी किसान इनको आसानी से बहुत कम दाम पर खरीद सकते हैं। जीवामृत बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्री की आवश्यकता होती है।

1. पानी	200 लीटर
3. देशी गाय का मूत्र	5-10 लीटर
2. देशी गाय का गोबर	10.0 किलो ग्राम
4. गुड़	1.0-1.5 किलो ग्राम
5. बेसन	1.0-1.5 किलो ग्राम
6. खेत या मेढ़ की मिट्टी	1.0 मुट्ठी

विशेष - 1. केवल गाय का गोबर उपयोग करें।

2. यदि आपके पास बैल है तो आधा गोबर बैल का मिला सकते हैं लेकिन अकेले बैल का गोबर नहीं होना चाहिए। भैंस और जर्सी, होल्स्टीन का मूत्र वर्जित है।

3. गोबर जितना ताजा होगा उतना ही अच्छा होगा। उसमें नमी होनी चाहिए, सूखा गोबर नहीं होना चाहिए। नमीयुक्त गोबर 7 दिन तक का प्रभावशाली होता है।

4. जो गाय जितना ज्यादा दूध देती है उसका गोबर व मूत्र उतना ही कम प्रभावशाली होता है, क्योंकि अधिकांश ऊर्जा दूध उत्पादन में खर्च होती है। कम दूध देने वाली गाय का गोबर व मूत्र अधिक प्रभावशाली होता है।

5. गौ-मूत्र जितना पुराना होगा उतना ही लाभकारी होगा।

6. चना, लोबिया या अरहर से बना बेसन सबसे सर्वोत्तम हैय

लेकिन सोयाबीन या मूँगफली न मिलाएं। सतह पर तेल आने से जीवाणुओं को प्राणवायु नहीं मिल पाती है। चने का बेसन पानी में जल्दी घुलता नही, इसलिए उसका पहले घोल बना लें फिर मिलाइये।

7. खेत के मेढ़ की फसल के जड़ों से चिपकी हुई एक मुट्ठी मिट्टी होनी चाहिए।

जीवामृत बनाने की विधिः-

200 लीटर पानी में 5-10 लीटर मूत्र मिलाएं। फिर इसमें 10 किलोग्राम गोबर मिला लें। अब इसमें काला गुड़ भी मिला लें। फिर क्रमशः बेसन व खेत की मेढ़ की मिट्टी मिला लें।अब इस घोल को घड़ी के कांटे (सुई) की दिशा में धीरे-धीरे घोलिए। बोरी से ढक कर रातभर रहने दें। बारिश का पानी या धूप से बचाएं। खुले स्थान पर रखें। 48 घंटे तक रहने दें। अगर शीत लहर **(12°C)** है तो 4 दिन रहने दें। सुबह-शाम 1 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में घोलिए। 48 घंटे (सर्दी में 4 दिन) के बाद उपयोग करें। जीवामृत तैयार होने के बाद 14 दिन तक उसका उपयोग कर सकते हैं, सर्वोत्तम परिणाम 7-10 दिन तक मिलता है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र

(An ISO 9001:2008 Certified Institution)

समीप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) दूरभाष : 01744-238048, 2380648

प्रवेश सूचनाः 2018-19 (कक्षा - V से XI तक)

Ranked No. 1 Boys Residential School of Haryana by EW
A wonderful Assimilation of Ancient and Modern Education

प्रवेश हेतु लिखित परीक्षा V से XI तक 25 मार्च, 2018 (तीन फोटो अनिवार्य)

काउंसलिंग 26 मार्च, 2018, 04 अप्रैल-2018 से कक्षाएँ शुरू, **प्रॉस्पैक्टस 400/- रुपए (डाक से 500/- रुपए)**

विशेषताएँ :-संस्कारक्षम वातावरण एवं वैशिष्ट्य से परिपूर्ण शिक्षण संस्थान, पूर्णतःआवासीय, सभी प्रांतों के विद्यार्थी, पूर्णतः वातानुकूलित प्रयोगशालाएँ, राइफल शूटिंग, एन.सी.सी. व घुड़सवारी प्रशिक्षण, योग अनिवार्य, गुरुकुल परिसर में ही बैंक व डाकघर की व्यवस्था, प्राकृतिक चिकित्सालय, गो-दुग्ध की निजी व्यवस्था, प्राकृतिक कृषि से उत्पादित अन्न, राष्ट्र-स्तरीय खेल सुविधा हेतु विशाल जिमनेजियम हाल, कक्षा- **XI** व **XII** में नॉन-मेडिकल, मेडिकल व कॉमर्स संकाय। भोजन व अन्य व्यय 6100-6600/- रुपए मासिक।

नोटः **1. दसवीं व बारहवीं कक्षा में कोई नया प्रवेश नहीं।**

2. 10+1 व 10+2 के विद्यार्थियों के लिए I.I.T-JEE/AIPMT/NDA/Merchant Navy/Clat व दसवीं के लिए NTSE की कोचिंग की सुविधा।

विशेषः प्रवेश हेतु पंजीकरण 15 दिसम्बर से 10 मार्च 2018 तक।

निदेशक एवं प्राचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार **10+2** तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2008** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी) : इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण) : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु) : गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी. सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.) : सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन. एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स भी कराता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त **जीरो बजट प्राकृतिक कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं **'गुरुकुल-दर्शन'** मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

गुरुकुल की विविध गतिविधियों की झलकियाँ

गांव सुरमी में शिविर समापन समारोह में मुख्य अध्यापक को महर्षि दयानन्द का स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित करते हुए प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी जी

मलिकपुर में शिविर समापन समारोह में मुख्य अध्यापक को महर्षि दयानन्द का स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित करते हुए प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी जी

गुरुकुल के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता छात्रों एवं अध्यापकों के साथ प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी जी एवं प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता जी

शाहाबाद में शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर आयोजित किसान मेले में प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए अनिल कक्कड़, सुभाष आर्य व अन्य महानुभाव

राजकीय कन्या उच्च विद्यालय, पूण्डरी में शिविर के उपरान्त वेद प्रचार विभाग गुरुकुल के प्रचारकों को सम्मानित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य व स्टाफ

एक समारोह में एनडीए के छात्रों पुरस्कृत करते हुए प्रधान कुलवन्त सैनी, उप-प्रधान राजेन्द्र कलेर, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता व सह-प्राचार्य शमशेर सिंह

गुरुकुल का प्राकृतिक कृषि फार्म देखने आए कृषि विशेषज्ञों के साथ गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व डॉ. वजीर सिंह

जीरो बजट प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु गांव कैंथल खुर्द में प्रगतिशील किसानों को सम्बोधित करते हुए प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी जी व सह-प्राचार्य शमशेर सिंह जी

अभूतपूर्व अग्निहोत्र में गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सैनी ने आहुति अर्पित की

गुरुग्राम : सर्व कल्याण धर्मार्थ न्यास पानीपत के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध समाजसेवी महात्मा वेदपाल के मार्गदर्शन में आयोजित वर्षपर्यन्त **अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र** के तहत चल रहे अभूतपूर्व अग्निहोत्र में गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने आहुति अर्पित की। आर्य समाज बसई (गुरुग्राम) में **महात्मा वेदपाल जी**, सुरेन्द्र सिंह तोमर एवं दलजीत सिंह के अथक प्रयासों से 1 अक्तूबर 2017 से आरम्भ हुआ यह अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र **30 सितम्बर 2018** तक चलेगा जिसमें प्रतिदिन भारी संख्या में श्रद्धालु भाग ले रहे हैं।

गुरुकुल के **प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी** यज्ञ में भाग लेने हेतु विशेष रूप से कुरुक्षेत्र से गुरुग्राम पहुंचे। इस अवसर पर उनके साथ गुरुकुल के मुख्य लेखाधिकारी **सतपाल सिंह**, आचार्य **नन्दकिशोर**, मुख्य संरक्षक **संजीव आर्य**, एन.डी. ए. के प्रशिक्षक **सुबेदार बलवान सिंह**, डीपीई **राजिन्द्र सिंह**, **बलबीर सिंह** आदि ने भी मंत्रोच्चारण करते हुए यज्ञ में आहुति दी। **प्रधान कुलवन्त सैनी** ने कहा कि यज्ञ से बढ़कर कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है। यज्ञ मार्ग पर चलकर जीवन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की जा सकती है। गुरुकुल में बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ वैदिक संस्कृति की शिक्षा दी जाती है और प्रात: सायं यज्ञ किया जाता है जिससे बच्चों में अच्छे संस्कार आएं। न्यास प्रमुख **महात्मा वेदपाल जी** ने यज्ञ में पधारने पर सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Regn. No. HR/KKR/181/2015-2017

स्वामी- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक -कुलवंत सिंह सैनी

मूल्य-15रु एक प्रति (150रु वार्षिक)

प्रतिष्ठा में

____

____

____